दिसंबर 2022
खंड - XXXVIII | अंक - IV

एक्ज़िमिअस: निर्यात लाभ

इस अंक में

- दक्षिणी अफ्रीका के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को नया मुकाम
- भारत–कैरिफोरम आर्थिक संबंधों को बढ़ाना और सहयोग की संभावनाएं
- कर्नाटक से निर्यातों को सुदृढ करना
- विपरीत शुल्क ढांचा और सुरक्षा की प्रभावी दर : सैद्धांतिक और अनुभवजन्य विश्लेषण
- भारत से सॉप्टवेयर सेवाओं का निर्यात: एक नज़र में

तिमाही प्रकाशन

इंडिया एक्ज़िम बैंक

केन्द्र एक भवन, 21 वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल,
कफ़ परेड, मुंबई - 400 005.
फोन: 022 2217 2600
ईमेल: ccg@eximbankindia.in
www.eximbankindia.in
www.eximmitra.in

दक्षिणी अफ्रीका के साथ भारत के आर्थिक संबंधों का नया मुकाम

दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय (सैडेक) 1980 से अस्तित्व में है। वर्तमान में 16 देश इसके सदस्य हैं। अंगोला, बोत्सवाना, कोमोरोस, कांगो, एस्वातिनी, लेसोथो, मेडागास्कर, मलावी, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, नामीबिया, सेशेल्स, दक्षिण अफ्रीका, तंज़ानिया, ज़ाम्बिया और ज़िम्बाब्वे जैसे 16 देश इसके सदस्य हैं। सैडेक देश अफ्रीका का अभिन्न हिस्सा हैं। अफ्रीका के कुल क्षेत्रफल का 35.4%, अफ्रीका के सकल घरेलू उत्पाद का 28.4% और अफ्रीका की जनसंख्या का 28.2% इन्हीं देशों में है। 2021 में, अफ्रीका के प्रमुख क्षेत्रीय व्यापारिक गुटों में सैडेक, कोमेसा के बाद अफ्रीकी क्षेत्र की नॉमिनल जीडीपी में योगदान के मामले में दूसरे स्थान पर रहा।

भारत के साथ सैडेक देशों का व्यापार

सैडेक देशों के साथ व्यापक आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने के प्रयोजन से भारत सरकार ने 14 अक्टूबर, 1997 को सैडेक के साथ आर्थिक सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे। अन्य विकासशील देशों के साथ व्यापार बढ़ने से भारत के वैश्विक व्यापार में विविधता आई है और सैडेक आयातक तथा निर्यातक के रूप में भारत के लिए अहम भागीदार के रूप में उभरा है।

पिछले 10 वर्षों के दौरान, सैडेक देशों के साथ भारत का कुल व्यापार 2012 के 27.1 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2021 में 30.8 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया है। सैडेक को भारत का कुल निर्यात 2012 के 9.7 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 12.7 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, वहीं सैडेक से भारत का आयात 2012 में 17.5 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2021 में 18.1 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। 2021 में सैडेक के वैश्विक आयात में भारत की हिस्सेदारी 7.2% की रही। जबकि सैडेक के वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 8.2% की रही। सैडेक के साथ भारत का व्यापार घाटा रहता आया है। 2021 में 5.4 बिलियन यूएस डॉलर का व्यापार घाटा रहा।

भारत से सैडेक को निर्यात होने वाले उत्पादों में खनिज ईंधन और फार्मासूटिकल उत्पादों का वर्चस्व रहा। वर्ष 2021 में भारत से सैडेक को कुल निर्यात का 38.2% हिस्सा खनिज ईंधन और फार्मासूटिकल उत्पादों का रहा। भारत से सैडेक को निर्यात होने वाली अन्य प्रमुख वस्तुओं में रेलवे या ट्रामवे के अलावा अन्य वाहन, जहाज, नाव और फ्लोटिंग संरचनाएं, मशीनरी, यांत्रिक उपकरण, अनाज, विद्युत उपकरण शामिल रहे। सैडेक में दक्षिण अफ्रीका भारत का सबसे बड़ा आयातक है। 2021 में भारत के कुल निर्यातों में इसकी

हिस्सेदारी लगभग 47.2% की रही। इसके बाद मोज़ाम्बिक, तंज़ानिया और मॉरीशस का स्थान रहा। दक्षिण अफ्रीका के वैश्विक आयात में भारत की भागीदारी 3.4% रही, लेकिन तंज़ानिया और मोज़ाम्बिक के मामले में यह कम (प्रत्येक 1%) रही। मॉरीशस के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौते (सीईसीपीए) पर हस्ताक्षर करने के बावजूद, 2021 में भारत से सैडेक को निर्यात भारत के कुल निर्यातों के 5.9% रहे और मॉरीशस के वैश्विक आयात में भारत की हिस्सेदारी सिर्फ 0.4% रही। 2021 में सैडेक के कुल आयातों में 18.4% की हिस्सेदारी के साथ चीन सैडेक को प्रमुख आपूर्ति करने वाला देश रहा।

सैडेक से भारत के आयात में बड़े पैमाने पर मोती, कीमती पत्थर और धातुओं का वर्चस्व रहा, इसके बाद खनिज ईंधन, तेल और इससे संबंधित उत्पादों का स्थान रहा। 2021 में इस क्षेत्र से भारत को होने वाले आयात में 72% हिस्सेदारी इन्हीं दोनों की रही। इस क्षेत्र से आयात होने वाली चीजों में तीसरा स्थान तांबे और इसकी वस्तुओं का रहा। 2021 में, सैडेक देशों में दक्षिण अफ्रीका, भारत का सबसे बड़ा आयात स्रोत रहा, इसके बाद अंगोला, तंज़ानिया, मोज़ाम्बिक और बोत्सवाना रहे। सैडेक से भारत के कुल आयातों में 95.6% हिस्सेदारी इन्हीं पांच देशों की रही।

सैडेक के साथ भारत का वाणिज्यिक व्यापार

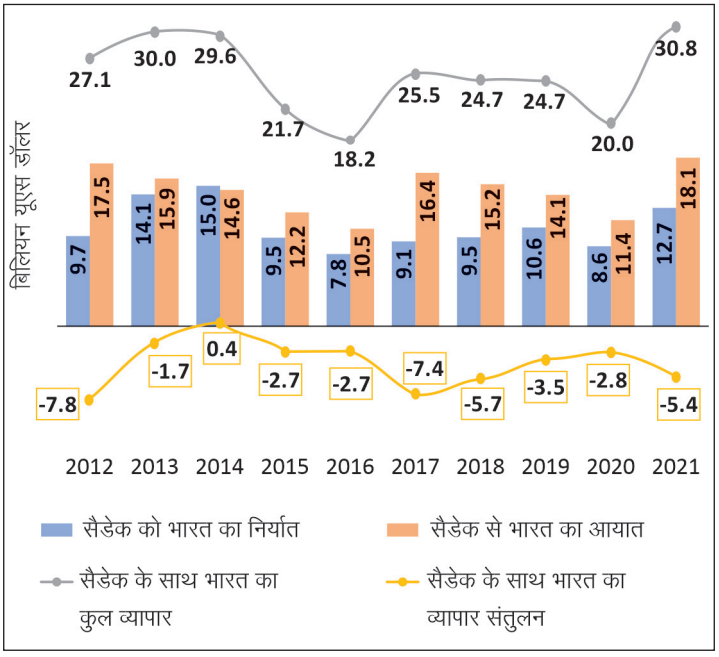

स्रोतः आईटीसी ट्रेडमैप, यूएन कॉमट्रेड, और इंडिया एक्ज़िम बैंक

सैडेक में भारत का निवेश

वित्त मंत्रालय और भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 1996 से अगस्त 2022 के दौरान सैडेक क्षेत्र में भारत का स्वीकृत संचयी निवेश 69.9 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। सैडेक क्षेत्र में भारत का निवेश अप्रैल 1996 से अगस्त 2022 के दौरान अफ्रीका में भारतीय निवेश का लगभग 94.2% रहा। मॉरीशस, मोज़ाम्बिक और दक्षिण अफ्रीका इस क्षेत्र में भारत के निवेश वाले शीर्ष देश रहे। एफडीआई मार्केट्स डाटाबेस के अनुसार, भारत 2012-2021 के दौरान सैडेक क्षेत्र में सातवां सबसे बड़ा निवेशक रहा। इस क्षेत्र में प्रमुख निवेश कोयला, तेल और गैस में रहा। इनके बाद धातु, संचार, नवीकरणीय ऊर्जा, परिवहन और भंडारण, रसायन और ऑटोमोटिव ओईएम का स्थान रहा।

सैडेक क्षेत्र के साथ भारत की साझेदारी बढ़ाने की रणनीति

भारत और सैडेक के बीच सुदृढ़ और गहरे सहयोग संबंध हैं। सैडेक के साथ भारत का व्यवसाय, कई क्षेत्रों में, निजी क्षेत्र द्वारा संचालित रहा है, जिसके कारण घरेलू बाजार से काफी एकीकरण हुआ है। दुनिया भर में बनने वाली नई व्यापार और निवेश साझेदारी के रूप में, भारत और दक्षिणी अफ्रीकी देश निम्नलिखित क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से उपयोगी साझेदारी कर सकते हैं।

विनिर्माण मूल्य श्रृंखलाओं का विकास

सैडेक मूल्य श्रृंखला में मुख्य रूप से अपस्ट्रीम भागीदारी है। इसमें प्राथमिक वस्तुओं, खनिजों, तम्बाकू, चीनी और गोमांस का सीमित स्थानीय मूल्यवर्धन के साथ निर्यात शामिल है। सैडेक ने खनिज क्षेत्र (तांबा, खनन इनपुट, बैटरी/ऊर्जा भंडारण), फार्मासूटिकल्स (एआरवी, मलेरिया-रोधी दवाएं, मलेरिया रैपिड टेस्ट किट, मच्छरदानी, लैटेक्स वस्तुएं) और कृषि-प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में संभावित परियोजनाएं चिह्नित की हैं। इसके अतिरिक्त, सैडेक में क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाओं के विकास के लिए कपड़ा, सौंदर्य प्रसाधन, आवश्यक तेल के साथ-साथ चमड़ा और चमड़े के उत्पाद, मांस और मांस उत्पाद, फल और सब्जियों जैसे क्षेत्रों में व्यापक अवसर हैं। भारतीय कंपनियों द्वारा विनिर्माण क्षेत्र में अधिक एफडीआई से मूल्य श्रृंखलाओं के विकास में सहयोग मिलेगा, क्योंकि इससे विदेशी पूंजी और तकनीकी जानकारी मिलेगी।

ईवी मूल्य श्रृंखला के लिए महत्त्वपूर्ण खनिजों के स्रोत के लिए रणनीतिक सहयोग

एशिया में चीन के बाद भारत सबसे बड़े इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजारों में से एक है। हालांकि, पारंपरिक आईसीई वाहनों की तुलना में ज्यादा कीमतें और चार्जिंग ढांचे की कमी के कारण इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने के मामले में भारत अभी पीछे है। ईवी और विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक और बैटरी से संबंधित आवश्यकताओं में बदलाव के साथ लिथियम, कोबाल्ट, तांबा और निकल जैसे खनिजों की मांग बढ़ने की उम्मीद है। अफ्रीका का दक्षिणी क्षेत्र लिथियम, ग्रेफाइट, कोबाल्ट, निकल, तांबा और अन्य दुर्लभ खनिजों से समृद्ध है। अफ्रीकी खनन मूल्य श्रृंखला में भारत अहम भूमिका निभा सकता है। बैटरी और इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग से इस क्षेत्र को लाभ मिल सकता है। भारत सरकार द्वारा संचालित कंपनियां लिथियम और कोबाल्ट जैसे महत्त्वपूर्ण खनिजों को संरक्षित करने के लिए संयुक्त उपक्रम बना सकती हैं। इससे 2030 तक इलेक्ट्रिक वाहनों को बड़े पैमाने पर अपनाने की भारत की योजना में भी मदद मिल सकती है। महत्त्वपूर्ण खनिजों के लिए भारत की आयात

आवश्यकताएं सुनिश्चित करने के लिए संबंधित देशों के साथ रणनीतिक निवेश कोष या आयात ऋण-व्यवस्थाएं स्थापित की जा सकती हैं।

भारत और सैडेक देशों में ऊर्जा-परिवर्तन के उद्देश्य से दक्षिणी अफ्रीकी खनिजों का लाभ लेना

दुनिया का दुर्लभ मृदा तत्त्व (आरईई) बाजार काफी हद तक चीन द्वारा नियंत्रित है। अफ्रीका के पास वैश्विक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने के लिए संभावित खनिज संसाधन हैं। दक्षिण अफ्रीका, मेडागास्कर, मलावी, नामीबिया, मोज़ाम्बिक, तंजानिया और ज़ाम्बिया जैसे देशों में नियोडिमियम, प्रेजोडियम और डिस्प्रोसियम अच्छी मात्रा में हैं। अपेक्षाकृत रूप से प्रचुर मात्रा में मौजूद ये तत्त्व सामान्य अयस्कों की तुलना में कम खनन योग्य हैं। तथापि, खनिज संसाधनों के विकास के लिए ऐसे व्यवसाय मॉडल होने चाहिए, जिनसे देश या क्षेत्र को अधिकतम लाभ मिल सके।

अमेरिका, यूरोपीय संघ, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे प्रमुख आरईई उपभोक्ता वैकल्पिक आरईई आपूर्ति श्रृंखला विकसित करने के विकल्प तलाश रहे हैं। यह अफ्रीकी देशों के लिए अपनी स्वयं की आरईई मूल्य श्रृंखला विकसित करने का अच्छा अवसर हो सकता है। भारत और अफ्रीका के वित्त विकास संस्थान इन वाणिज्यिक आरईई विकास प्रयासों की जरूरतों को समझने के लिए दक्षिणी अफ्रीकी देशों की सरकारों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और मूल्य श्रृंखला विकास में कंपनियों का सहयोग कर सकते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका में बढ़ता खनन क्षेत्र

अन्वेषण गतिविधियों के कारण खनन उद्योग में अत्यधिक ऊर्जा की खपत होती है और इसमें पानी की भी बड़ी मात्रा लगती है। भारतीय खनन कंपनियां इन प्रक्रियाओं के ऑटोमेशन के लिए प्रौद्योगिकी का तेजी से उपयोग कर रही हैं। इसके साथ ही भारतीय कंपनियों ने अक्षय उर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा देते हुए अपशिष्ट को कम करने, संसाधन दक्षता में वृद्धि और उत्पादन बढ़ाने के लिए मूल्य श्रृंखला में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना भी शुरू कर दिया है। अफ्रीकी खनन क्षेत्र में निवेश करने वाली भारतीय कंपनियां जल बचत तकनीकों या नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करने में भी मदद कर सकती हैं, जिससे इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में योगदान हो सकता है।

बुनियादी निवेश में विकास वित्त संस्थाओं की बढ़ती भूमिका

सैडेक के सदस्य देशों में छोटी-बड़ी अर्थव्यवस्थाएं, द्वीप तथा निम्न और मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं। क्षेत्रीय बुनियादी ढांचागत विकास से एक बड़ा बाजार और अधिक आर्थिक अवसर बनते हैं। क्षेत्रीय आर्थिक विकास, व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने और उसे लगातार बनाए रखने के लिए बुनियादी ढांचागत विकास महत्त्वपूर्ण है। साथ ही, यह गरीबी उन्मूलन और लोगों की सामाजिक परिस्थितियों को भी बेहतर बनाता है। फिलहाल अफ्रीकी सार्वजनिक ऋण का परिदृश्य, बढ़ता बुनियादी ढांचागत अंतर और कोविड महामारी के चलते सीमित राजकोषीय उपाय ऐसे कुछ अहम कारक हैं, जो विकास वित्त संस्थाओं के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी बढ़ाने के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे में निजी निवेश बढ़ाने के अवसर प्रदान करते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका में व्यापार वित्त तक पहुंच

विदेश में व्यापार के लिए व्यापार वित्त बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई बार एक देश से दूसरे देश में, विशेष रूप से उभरते बाजारों में माल की आवाजाही व्यापार वित्त के बिना नहीं हो सकती है। अफ्रीकी विकास बैंक और अफ्रेक्ज़िम बैंक के आकलन के अनुसार, अफ्रीका में व्यापार वित्त अंतर 2019 में 81.8 बिलियन यूएस डॉलर का रहा और पिछले एक दशक में यह औसतन 91 बिलियन यूएस डॉलर का रहा है। यह तथ्य कि अफ्रीका के 40% व्यापार में बैंक मध्यवर्ती संस्था के रूप में काम करते हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर यह आंकड़ा 80% का है। कन्फर्मिंग बैंकों की चुनौतियां अफ्रीका में वित्त व्यापार में लगे घरेलू बैंकों के लिए बड़ी बाधा हैं। वित्त विकास संस्थाएं व्यापार वित्त के इस अंतर को भरने के लिए अफ्रीका सहित उभरते बाजारों में गैर-पारंपरिक कन्फर्मिंग बैंकों को सहयोग देने के लिए जोखिम भागीदारी और ट्रांज़ैक्शन गारंटी समझौते जैसे वित्तीय उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं।

समुद्री और रक्षा सहयोग

सिपरी[1] इंटरनेशनल आर्म्स ट्रांसफर डाटाबेस के अनुसार, भारत 2017 से 2021 के दौरान 23वां सबसे बड़ा रक्षा निर्यातक रहा। 2017-2021 के दौरान अफ्रीका में भारतीय हथियारों के निर्यात का 6.6% हिस्सा मॉरीशस को रहा। इसके बाद मोज़ाम्बिक (5%) और सेशेल्स (2.3%) का स्थान रहा। एयरोस्पेस, रक्षा, समुद्री उपकरण और जहाजों के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ने से अफ्रीका की सुरक्षा सुनिश्चित होने के साथ-साथ उसकी तकनीकी क्षमता बढ़ेगी। साथ ही, 2025 तक भारत के 5 बिलियन यूएस डॉलर के रक्षा निर्यातों के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी। विशेष रूप से हिंद महासागर के क्षेत्र में सुरक्षित समुद्री वातावरण सुनिश्चित करने में भारत और अफ्रीकी देश महत्त्वपूर्ण स्टेकहोल्डर हैं। हिंद महासागर के तटीय देशों (आईओएलसी) में से नौ अफ्रीका में हैं। इनमें कोमोरोस, केन्या, मेडागास्कर, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, सेशेल्स, सोमालिया, दक्षिण अफ्रीका और तंज़ानिया शामिल हैं। भारत हाल के वर्षों में एक प्रमुख रक्षा निर्यातक के रूप में उभरा है और अफ्रीका की समुद्री, एयरोस्पेस और रक्षा जरूरतों को पूरा कर सकता है। भारत पहले ही अफ्रीका को तटीय पैट्रोल जहाज, हेलीकॉप्टर और सैन्य बसों का निर्यात कर चुका है। आने वाले समय में, स्वदेशी रूप से विकसित अत्याधुनिक तकनीकों, जिनमें पानी के नीचे काम करने वाले मानव रहित सिस्टम और मानव रहित हवाई प्रणालियों को भी अफ्रीका को निर्यात किया जा सकता है। इसके अलावा साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में भी सहयोग की काफी संभावनाएं हैं। ■

[1] स्टॉकहोम इंटरनैशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट

भारत–कैरिफोरम आर्थिक संबंधों को बढ़ाना और सहयोग की संभावनाएं

कैरिबियाई फोरम में 15 देश हैं। इनके नाम हैं एंटीगुआ, बारबुडा, बहामास, बारबाडोस, बेलीज़, डॉमिनिका, डॉमनिकन रिपब्लिक, हैती, ग्रेनेडा, गुयाना, जमैका, सेंट लूसिया, सेंट किट्स और नेविस, सेंट विंसेंट एंड द ग्रेनेडाइंस, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टौबैगो। 2020 में इन देशों की कुल जीडीपी 160.2 बिलियन डॉलर और जनसंख्या 29.1 मिलियन[1] थी। खनिजों और वस्तुओं के समृद्ध भंडार के अलावा, इस क्षेत्र के देश सुंदर समुद्र तटों, भरपूर धूप और प्राकृतिक सुंदरता से संपन्न हैं, इसलिए ये पर्यटन के भी बड़े आकर्षण केन्द्र हैं।

कैरिफोरम देशों का अंतरराष्ट्रीय व्यापार

खुला व्यापार कैरिबियाई फोरम की अर्थव्यवस्थाओं की विशेषता है, क्योंकि छोटे द्वीप वाली अर्थव्यवस्थाओं के लिए अपने दम पर हर चीज का उत्पादन करना संभव नहीं होता है। इसलिए व्यापार पर इनकी निर्भरता बहुत अधिक हो जाती है। इस क्षेत्र के देशों के लिए व्यापार का महत्त्व इस बात से पता चलता है कि इन अर्थव्यवस्थाओं ने सदस्य-राज्यों के बीच टैरिफ और कोटा जैसी व्यापार बाधाओं को दूर करने के लिए कई व्यापारिक समूहों का गठन किया है। कैरिबियन कम्युनिटी एंड कॉमन मार्केट (कैरीकॉम) और ऑर्गनाइजेशन ऑफ ईस्टर्न कैरिबियन स्टेट्स (ओईसीएस) इस क्षेत्र में दो सबसे लोकप्रिय व्यापार समूह हैं। इसके अलावा, कई द्वीपों ने यूके, कनाडा और यूरोपीय संघ के सदस्यों के साथ तरजीही व्यापार समझौते किए हैं। ये व्यापार समझौते कैरिफोरम देशों की अर्थव्यवस्थाओं को व्यापक बाजारों में अवसर उपलब्ध कराने में मदद करते हैं।

सदी की शुरुआत के बाद से कैरिफोरम देशों का कुल व्यापार तीन गुना से अधिक हो चुका है। कोविड-19 से पहले 2019 में वस्तु व्यापार 94.7 बिलियन यूएस डॉलर के उच्च स्तर पर पहुंच गया, लेकिन फिर कोविड-19 महामारी ने दुनिया को हिला दिया और अंतरराष्ट्रीय व्यापार ध्वस्त हो गया, क्योंकि देशों ने वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सीमाओं को बंद कर दिया। फिर भी, निर्यात में आयात की तुलना में अधिक लचीलापन दिखा, जिसका मतलब है कि व्यापार घाटा कम हुआ है।

कैरिफोरम देशों के साथ भारत का व्यापार

भारत और कैरिबियाई देशों के बीच ऐतिहासिक और मधुर संबंध रहे हैं। कैरिबियाई देशों से भारत के संबंध कम से कम 19वीं शताब्दी से देखे जा सकते हैं, जब भारतीय अनुबंधित श्रमिक चीनी की मिलों में काम करने के लिए कैरिबियाई देशों के तटों पर पहुंचे। वर्तमान में, इंडो-कैरिबियन, कैरिफोरम के कई देशों में सबसे बड़े जातीय समूह[2] में से एक है।

[1] आईएमएफ डब्ल्यूईओ

[2] गयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम

वर्ष 2001 में, भारत और कैरिफोरम देशों ने आपस में 52.4 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य की वस्तुओं का व्यापार किया। भारत का निर्यात 49.9 मिलियन यूएस डॉलर का रहा। इसमें फार्मासूटिकल उत्पादों का सबसे बड़ा हिस्सा रहा। जबकि कैरिफोरम देशों से भारत का आयात केवल 2.5 मिलियन यूएस डॉलर का रहा। वर्ष 2009 में भारत का कैरिफोरम के साथ कुल व्यापार 1 बिलियन यूएस डॉलर के स्तर को पार कर गया। उसी वर्ष निर्यात 847.7 मिलियन यूएस डॉलर और आयात 204 मिलियन यूएस डॉलर का रहा। वर्ष 2011 में कुल व्यापार बढ़ा और लगभग 3 बिलियन यूएस डॉलर के शिखर पर पहुंच गया, क्योंकि इस क्षेत्र के साथ भारत के निर्यात और आयात दोनों में वृद्धि हुई। तथापि, 2013 से भारत से परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात में गिरावट के कारण भारत और कैरिफोरम देशों के बीच व्यापार में कमी आई है। वर्ष 2019 में, कुल व्यापार 1.2 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। वर्ष 2013 के बाद, इस क्षेत्र से भारत का आयात बढ़ा है, क्योंकि भारत ने इस क्षेत्र से (मुख्य रूप से डोमिनिकन रिपब्लिक से) सोने का आयात करना शुरू कर दिया है। भारत का इस क्षेत्र के साथ व्यापार अधिशेष था, जो 2014 में घाटे में बदल गया। 2016 में व्यापार घाटा 618.9 मिलियन यूएस डॉलर पर पहुंच गया। इसके बाद से व्यापार अंतर कम हुआ है और 2020 में, भारत का इस क्षेत्र के साथ मामूली व्यापार अधिशेष रहा।

कैरिफोरम में आवक एफडीआई

कैरिबियाई सरकारें सामान्यतया विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक और कुछ मामलों में पर्यावरणीय उद्देश्यों को हासिल करने के लिए बड़े पैमाने पर अधिमानी कर उपायों या राजकोषीय नीतिगत उपायों का प्रयोग करती हैं। ये उपाय स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में बचत और निवेश को प्रोत्साहित करते हैं, विशिष्ट उद्योगों को बढ़ावा देते हैं, विशिष्ट वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग या उत्पादन को हतोत्साहित या प्रोत्साहित करते हैं। बहुत सी अन्य चीजों के अलावा भी व्यापार वृद्धि और विकास में मदद के साथ रोजगार सृजन और पर्यावरण की सुरक्षा करते हैं। इन प्रोत्साहनों को लागू करने से करों से आने वाले सरकारी राजस्व में कमी आ सकती है, लेकिन इनके उपयोग के लिए पूरे क्षेत्र से सहयोग मिल रहा है, क्योंकि इनसे होने वाला अनुमानित लाभ लागत से बहुत अधिक है। कैरिबियन क्षेत्र विशेष रूप से नए निवेशकों के लिए विश्व स्तर पर कर लाभों में अपनी उदारता के लिए जाना जाता है, क्योंकि यह क्षेत्र अपने भौगोलिक आकार, बाजार के आकार, अपेक्षाकृत कम आंतरिक मांग और पड़ोसी देशों से उल्लेखनीय प्रतिस्पर्धा के चलते होने वाले स्पर्धात्मक नुकसान की भरपाई करना चाहता है।

कोरोना महामारी के चलते पर्यटन में गिरावट आने के कारण वर्ष 2020 में इस क्षेत्र में आवक एफडीआई बहुत प्रभावित हुआ और वस्तुओं की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में भी भारी गिरावट आई। इस प्रकार, सेवाओं और वस्तु आधारित

अर्थव्यवस्थाओं, दोनों के निवेश प्रवाह को झटका लगा। हालांकि, 2023 तक एफडीआई आवक के पूर्व-संकट स्तर तक पहुंचने की उम्मीद है।

कैरिफोरम में भारतीय निवेश

अप्रैल 1996 से मार्च 2021 के दौरान कैरिफोरम देशों में भारत का निवेश 279 मिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो भारत के कुल बाहरी विदेशी निवेश के एक प्रतिशत से थोड़ा कम है। अप्रैल 1996 से मार्च 2011 के दौरान संचयी निवेश 28.3 मिलियन यूएस डॉलर का रहा। 2011 के बाद, वित्तीय वर्ष 2012-13 के दौरान यह निवेश 55 मिलियन यूएस डॉलर पर पहुंच गया। केवल 2014-15 और 2018-19 को छोड़कर भारतीय निवेश निचले स्तर पर बना हुआ है, जब इन दो वर्षों में निवेश की यह राशि क्रमशः 39.1 मिलियन यूएस डॉलर और 43.1 मिलियन यूएस डॉलर रही।

कैरिबियाई देशों में निवेश के अवसर

कैरिकॉम सचिवालय का 2015-2019 का नीतिगत दस्तावेज कैरिबियाई क्षेत्र में निवेश के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है। सचिवालय की रणनीति में चिह्नित किए गए कई क्षेत्र कैरिबियन एसोसिएशन ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रमोशन एजेंसीज़ (कैपा) के 23 सदस्य देशों द्वारा उनकी 2016 की क्षेत्रीय निवेश प्रोत्साहन रणनीति में चिह्नित किए गए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का हिस्सा हैं। यानी इसमें सृजनात्मक उद्योग, सेवाएं, उद्योग, विनिर्माण, रिसॉर्ट और होटल विकास, कृषि, आईसीटी, बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग, लॉजिस्टिक और परिवहन, नवीकरणीय ऊर्जा आदि पर जोर दिया गया है।

भारत के लिए, कैरिबियाई क्षेत्र एक आदर्श जगह के रूप में है क्योंकि यह अमेरिका के पास स्थित है। बहुत से कैरिबियाई देशों से अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और यूरोप पहुंचना बहुत सुलभ है। कैरिबियाई देश अपने प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के साथ पर्यटन के मक्का के तौर भी काफी सराहे गए हैं।

आगे की राह

जातीय संबंधों और साझा औपनिवेशिक इतिहास ने द्विपक्षीय संबंधों की नींव रखी। इसके बाद दोनों पक्षों की ओर से सर्वोच्च स्तर तक लगातार संवाद करने और परस्पर लाभ के लिए व्यवसाय बढ़ाने के सचेत प्रयास किए गए हैं।

भारत और कैरिफोरम के बीच व्यापार को बढ़ाना

भारत और कैरिफोरम देश एक दूसरे के साथ साझेदारी कर पारस्परिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। भारत और कैरिफोरम देशों के बीच व्यापार 2001 में 52.4 मिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2019 में लगभग 1.2 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया है। हालांकि, कैरिफोरम के वैश्विक आयात में भारत की हिस्सेदारी 2020 में केवल 1.2% रही। भारत में उत्पाद श्रेणियों, जैसे खनिज ईंधन और तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स, परिवहन वाहन, अनाज, ऑप्टिकल उपकरण, मांस और खाद्य मांस के उत्पाद और पशु या वनस्पति वसा और तेल आदि में निर्यात का विस्तार करने की क्षमता है।

व्यापार समझौतों का विस्तार

लैटिन अमेरिकी और कैरिबियन (एलएसी) क्षेत्र में, भारत के पास वर्तमान में चिली और मर्कोसुर के साथ तरजीही व्यापार समझौते (पीटीए) हैं और भारत और पेरू के बीच एक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत चल रही है। हालांकि, किसी भी कैरिफोरम देश के साथ भारत का एफटीए या पीटीए नहीं है। भारत ने त्रिनिदाद और टोबैगो के साथ एक व्यापार समझौते (1997 में हस्ताक्षरित) पर हस्ताक्षर किए हैं, जो एक दूसरे को तरजीही राष्ट्र का दर्जा देता है। कैरिफोरम देशों ने दुनिया के प्रमुख व्यापार समूहों के साथ कई व्यापार समझौते किए हैं। इसलिए भारतीय कंपनियों के लिए कैरिफोरम क्षेत्र अपनी मौजूदा क्षमताओं के अलावा, दुनिया के प्रवेश द्वार के रूप में भी कार्य कर सकता है।

परिवहन और लॉजिस्टिक्स लागत

भारत और कैरिफोरम देशों के बीच व्यापार करने में प्रमुख बाधाओं में से एक व्यापार लॉजिस्टिक्स और परिवहन लागत है। इन क्षेत्रों के बीच व्यापार क्षमता का पूरा इस्तेमाल करने के लिए ट्रांज़ैक्शन और परिवहन लागत को कम करने तथा व्यापार लॉजिस्टिक्स को सुव्यवस्थित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

लोगों का आदान-प्रदान, पर्यटन और मीडिया आदान-प्रदान

भले ही दोनों क्षेत्रों के बीच संबंध 19वीं शताब्दी से हैं, और कैरिफोरम देशों में भारतीयों की उल्लेखनीय उपस्थिति है, लेकिन व्यापार और व्यापार संस्कृति में अंतर के साथ-साथ भौगोलिक दूरी और कनेक्टिविटी की समस्याएं बेहतर आर्थिक एकीकरण के लिए चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए, लोगों से लोगों के आदान-प्रदान, पर्यटन और मीडिया के आदान-प्रदान के महत्त्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

उद्योग सहभागिता बढ़ाना

दोनों पक्षों के क्षेत्रों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के क्रम में भारत-एलएसी कॉन्क्लेव और अन्य उद्योग संघों के साथ चर्चा जैसे व्यवसाय सम्मेलन किए जा सकते हैं, ताकि शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और सरकार के प्रतिनिधियों के बीच संवाद बढ़ाने के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके और उद्यमी, निवेशक तथा व्यापार समुदाय इससे लाभान्वित हो सके।

नए दूतावासों के जरिए सहभागिता बढ़ाना

एलएसी क्षेत्र में भारतीय मिशनों की सीमित भौतिक उपस्थिति भारत और एलएसी क्षेत्र के बीच व्यवसाय बढ़ाने के लिए एक अन्य चुनौती है। एलएसी में भारत के केवल 14 दूतावास हैं, वहीं दूसरी ओर, भारत में एलएसी का प्रतिनिधित्व 21 दूतावासों द्वारा किया जाता है। भौतिक उपस्थिति बढ़ने के साथ व्यवसाय भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया जा सकता है। मिशनों से भारतीय कंपनियों के लिए वहां के बाजार में पहुंच प्रदान करने और वस्तुओं तथा सेवाओं के निर्यात में मदद मिलने की उम्मीद है। इन मिशनों से लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने और राजनीतिक पहुंच बढ़ाने में मदद मिलने की भी संभावना है। ■

कर्नाटक से निर्यातों को सुदृढ़ करना

कर्नाटक पिछले तीन दशकों से भारत के आर्थिक विकास में अग्रणी रहा है। कर्नाटक की राजधानी भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में उभरी है। वित्तीय वर्ष 2021 में कर्नाटक 8.4% की हिस्सेदारी के साथ भारत की 11.4 ट्रिलियन रुपये की जीडीपी में योगदान देने वाला चौथा सबसे बड़ा राज्य रहा। कर्नाटक से पहले महाराष्ट्र (13.9%), गुजरात (9.21%), और तमिलनाडु (9.19%) का स्थान रहा। कर्नाटक की प्रति व्यक्ति जीएसडीपी 1.71 लाख रुपये है, जो भारत की औसत जीएसडीपी (1 लाख रुपये) से कहीं अधिक है। कर्नाटक देश के प्रौद्योगिकी, सेवाओं और ज्ञान के केंद्र के रूप में उभरा है, जो अपनी एक अलग जगह बना रहा है। इसे राज्य में रोजगार के अवसरों की अधिकता से समझा जा सकता है जिनके कारण देशभर से कामगार कर्नाटक का रुख कर रहे हैं। हालांकि, राज्य के विकास में बड़ा योगदान बेंगलुरु स्थित आईटी क्षेत्र का है।

निर्यात निष्पादन

वित्तीय वर्ष 2022 में कर्नाटक से 26 बिलियन यूएस डॉलर का वस्तु निर्यात दर्ज किया गया। जबकि वित्तीय वर्ष 2018 में यह 18 बिलियन यूएस डॉलर का रहा था। वित्तीय वर्ष 2022 में निर्यात में रिकॉर्ड 70% की वृद्धि दर्ज की और चौथा सबसे बड़ा निर्यातक होने के साथ भारत के वस्तु निर्यात में उसकी हिस्सेदारी 6.1% रही। वित्तीय वर्ष 2022 में राज्य के निर्यात में 15% से अधिक की हिस्सेदारी पेट्रोलियम पदार्थों की रही। इसके बाद लौह व इस्पात की करीब 11%, और टेलीकॉम संयत्रों की 6.5% हिस्सेदारी रही।

यद्यपि सेवा क्षेत्र में कर्नाटक निर्विवाद रूप से अग्रणी रहा। वित्तीय वर्ष 2022 में भारत के सेवा निर्यात में 41% की हिस्सेदारी के साथ कर्नाटक का सेवा निर्यात 100 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। कर्नाटक के सेवा निर्यात में सबसे बड़ी हिस्सेदारी आईटी सेवाओं की रही। राज्य से उनका लगभग 65 बिलियन यूएस डॉलर का निर्यात किया गया। वित्तीय वर्ष 2026 तक कर्नाटक का 150 बिलियन यूएस डॉलर का आईटी निर्यात हासिल करने का लक्ष्य है।

निर्यात इन्फ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ करना

राज्य में क्षेत्रीय संपर्क (कनेक्टिविटी) में सुधार के साथ एक विकसित और लचीली निर्यात इन्फ्रास्ट्रक्चर है। यह निर्यात को सुविधाजनक बनाने के लिए परिवहन लागत को घटाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राज्य के अपने निर्यातों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के अलावा निर्यात इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास पड़ोसी राज्यों के विदेशी व्यापार प्रवाह को कर्नाटक के माध्यम से करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कर्नाटक में बारह छोटे बंदरगाहों और एक प्रमुख बंदरगाह के साथ 155 समुद्री मील (300 किलोमीटर) की समुद्री तटरेखा है। जबकि वित्तीय वर्ष 2022 में भारत के प्रमुख बंदरगाहों द्वारा संचालित कार्गो में प्रमुख बंदरगाह (एनएमपीटी) की हिस्सेदारी 5.5% की रही। अपर्याप्त बुनियादी अवसंरचना और सीमित क्षमता के कारण छोटे बंदरगाहों की हिस्सेदारी सिर्फ 0.1% की रही।

कारवाड़ को अपवादस्वरूप छोड़ दें तो छोटे बंदरगाहों की स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं है। एक तथ्य यह है कि उनके पास न केवल आवश्यक बुनियादी इन्फ्रास्ट्रक्चर और भंडारण सुविधाओं का अभाव है, बल्कि कनेक्टिविटी की भी एक बड़ी चुनौती है। इसके कारण निर्यातकों को भारी लॉजिस्टक लागत वहन करनी पड़ती है। इसलिए, कर्नाटक के अधिकांश कार्गो का निर्यात/ आयात पड़ोसी राज्यों के बंदरगाहों के जरिए हो रहा है।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) के मामले में कर्नाटक अपने समरूप राज्यों से पीछे है। भारत के 87 आईसीडी में से सिर्फ दो कर्नाटक में हैं। जबकि महाराष्ट्र में नौ, गुजरात में नौ और तमिलनाडु में 11 हैं। समग्र तौर पर कहें तो ज्यादा आईसीडी के विकास से कर्नाटक द्वारा वस्तुओं के निर्यात में बढ़ोतरी की एक नई गति देखी जा सकती है।

इसके अलावा, कर्नाटक, केंद्र सरकार के समन्वय से स्मार्ट सिटी मिशन के कवरेज का विस्तार कर सकता है। राज्य में स्मार्ट शहरों में व्यवस्थित तरीके से कस्बों की संख्या के कुल प्रतिशत को बढ़ाया जा सकता है। व्यापार के लिए संभावित बाजारों तक पहुंच बढ़ाने से पूरे कर्नाटक में निवेश को आकर्षित किए जाने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि स्मार्ट शहरों का विकास निवेश को बढ़ावा देने में मददगार हो सकता है। साथ ही, इस तरह के केंद्र और स्पोक मॉडल के माध्यम से राज्य से निर्यात किया जा सकता है। हर स्मार्ट शहर एक शहरीकृत केंद्र के रूप में कार्य कर पड़ोसी उपनगरों के विकास को प्रोत्साहित कर सकता है। ठीक उसी तरह से जैसे दिल्ली ने केंद्र के रूप में अपने स्पोक- एनसीआर के शहरों, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद और गुड़गांव में विकास का उदाहरण पेश किया है।

राज्य से निर्यात बढ़ाने की रणनीतियां

सबसे पहले और सबसे महत्त्वपूर्ण कदम के तौर पर बेंगलूरु में भीड़-भाड़ कम करने और शहरी नगर नियोजन पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया जाना चाहिए। बेंगलूरु का शुरुआती विकास मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में केंद्र सरकार के भारी निवेश से हुआ। इसके परिणामस्वरूप तकनीकी और वैज्ञानिक कौशल बढ़ा। वर्तमान में यह शहर राज्य की अर्थव्यवस्था में 85% से अधिक का योगदान देता है। राज्य के सॉफ्टवेयर निर्यात में इसकी लगभग 98% की हिस्सेदारी है। कर्नाटक सरकार ने कई मौकों पर यह स्वीकार किया है कि बेंगलूरु शहर के स्तर के अनुरूप उद्योगों को टियर-2 शहरों में स्थानांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। साथ ही आगामी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाए जाने की जरूरत है।

बेंगलुरू से उद्योगों, विशेष रूप से विनिर्माण को, राज्य के टियर-2 शहरों में स्थानांतरित करना उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पहला कदम होगा। इसके लिए राज्य सरकार और उसके संस्थानों द्वारा व्यापक और सुव्यवस्थित विपणन गतिविधियों के संचालन की आवश्यकता होगी। आईटी नीति 2020-25 में की गई परिकल्पना के अनुसार राज्य की 'बियॉन्ड बेंगलुरु' पहल के आधार पर वृहद् स्तर पर बेंगलूरु की डी-क्राउडिंग (भीड़ घटाने) की योजना बनाई जा सकती है। हालांकि, इसका दायरा आईटी क्षेत्र से परे विस्तारित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार द्वारा चिह्नित स्थलों को अपना आधार बनाने वाले व्यवसायों के लिए दस वर्ष की कर छूट या रियायतों को चिह्नित किया जा सकता है।

जहां तक राज्य की निर्यात तैयारियों का संबंध है, नीति आयोग के निर्यात तैयारी सूचकांक 2021 में कर्नाटक तीसरे स्थान पर है। हालांकि, गहन विश्लेषण से पता चलता है कि 'एक्सपोर्ट इकोसिस्टम पिलर' के तहत कर्नाटक 52.68 अंकों के साथ गुजरात (85.21), महाराष्ट्र (81.27), और उत्तर प्रदेश (55.48) के बाद चौथे स्थान पर है। 'एक्सपोर्ट परफॉर्मेंस पिलर' के तहत भी कर्नाटक की रैंकिंग (13वां स्थान) और बेहतर हो सकती थी। वस्तुतः उल्लेखनीय यह भी है कि यदि वित्तीय वर्ष 2022 के लिए निर्यात वृद्धि को ध्यान में न रखा जाए, तो कर्नाटक के वस्तु निर्यात में वित्तीय वर्ष 2018 से 2021 तक प्रत्येक वर्ष गिरावट दर्ज की गई है। बुनियादी इन्फ्रास्ट्रक्चर, वित्त तक पहुंच, निर्यात अवसंरचना, अनुसंधान एवं विकास अवसंरचना, निर्यात विविधीकरण आदि जैसे मापदंडों पर कर्नाटक का स्कोर राष्ट्रीय औसत की तुलना में कम है। राज्य को इन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, कर्नाटक को फिनटेक हब बनाने से ऋण परिदृश्य में काफी बदलाव आ सकता है। इस तरह राज्य में एमएसएमई के लिए व्यापार करना आसान हो जाएगा। यहां यह ध्यान में रखना होगा कि व्यापार वित्त में काम करने वाली फिनटेक कंपनियां आमतौर पर डिजिटलीकरण और ऑटोमेशन जैसी लागत में कमी की पहल पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इनमें ब्लॉकचेन और वैकल्पिक ऋण विकल्प (जैसे, पीयर-टू-पीयर लेंडिंग) शामिल हैं। वित्तपोषण के पारंपरिक स्रोतों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे एसएमई की पृष्ठभूमि के मद्देनजर उभरते वित्तीय तकनीकी नवाचारों द्वारा फंडिंग अंतर को कम करने के लिए कदम उठाए जाने की जरूरत है। इस मायने में, फिनटेक संस्थानों द्वारा डिजिटल ऋण प्रदान किए जाने से कर्नाटक में एमएसएमई को त्वरित पूंजी हासिल करने जैसा महत्त्वपूर्ण लाभ हासिल हो सकता है। पी2पी ऋण देने के अलावा, फिनटेक फर्मों द्वारा की जाने वाली प्रमुख पेशकशों में से पॉइंट-ऑफ-सेल लेनदेन-आधारित ऋण, बैंक और फिनटेक साझेदारी मॉडल, इनवॉइस डिस्काउंटिंग एक्सचेंज, मार्केटप्लेस और कैप्टिव मॉडल शामिल हैं। ये कर्नाटक के एमएसएमई के विकास को गति प्रदान कर सकती हैं।

कर्नाटक में निर्यात को बढ़ावा देने वाली और समन्वय की एक प्रभावी रणनीति विकसित कर राज्य की अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण खंड में तेजी लाने और राज्य के व्यवसायों की स्पर्धात्मकता में सुधार लाया जा सकेगा। सेमीकंडक्टर्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में कर्नाटक को मिलने वाला अंतर्निहित लाभ इस राज्य को जीवीसी में एकीकृत करने के लिए एक आदर्श स्थल बनाता है। इससे न केवल विनिर्माताओं को उत्पादन के प्रमुख चरणों में विशेषज्ञता हासिल करने में मदद मिलेगी, बल्कि राज्य को वैश्विक व्यापार मानचित्र पर भी महत्त्वपूर्ण स्थान मिलेगा। यह भी उल्लेखनीय है कि मूल्य श्रृंखला में सुधार के साथ दक्षता और अंतर प्रतिस्पर्धा बढ़ती है तथा एक मजबूत अर्थव्यवस्था की दिशा में विकास को बढ़ावा मिलता है। यह अंततः इस श्रृंखला में काम करने वाले व्यवसायों के लिए लाभप्रद होता है।

आगे की राह

कर्नाटक में वृद्धि और भारत की विकास यात्रा में उल्लेखनीय योगदान देने की अपार क्षमता है। इंडिया एक्ज़िम बैंक के अनुसार, राज्य के वर्तमान निर्यात परिदृश्य को देखते हुए, 2024-25 तक निर्यात (वस्तुओं और सेवाओं को मिलाकर) के 185 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंचने की संभावना है।

ऐसे में, जब राज्य गुणवत्तापूर्ण श्रमबल से संपन्न है और उच्च शिक्षा के लिए देशभर से लोग यहां आते हैं, तो सेवाओं के बुनियादी ढांचे की उपलब्धता राज्य की मौजूदा विनिर्माण क्षमता में इजाफा करती है। राज्य स्टार्ट-अप और फिनटेक समाधानों में भी उल्लेखनीय वृद्धि कर रहा है, जिससे राज्य को संयुक्त राज्य अमेरिका में कैलिफोर्निया जैसे प्रमुख क्षेत्रों की तरह उभरने में मदद मिलेगी। समग्र रूप से देखें तो कर्नाटक के भारत के वस्तु निर्यातों और सेवा निर्यातों, दोनों में अग्रणी रहने की संभावना है। ■

विपरीत शुल्क ढांचा और सुरक्षा की प्रभावी दर : सैद्धांतिक और अनुभवजन्य विश्लेषण

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने 1989 में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शोध वार्षिक (ईरा) पुरस्कार की स्थापना की थी। इस पुरस्कार का उद्देश्य भारत और विदेशों में स्थित विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय नागरिकों द्वारा अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, व्यापार, विकास और संबंधित वित्तपोषण में अनुसंधान को बढ़ावा देना है। "विपरीत शुल्क ढांचा और सुरक्षा की प्रभावी दर: सैद्धांतिक और अनुभवजन्य विश्लेषण" शीर्षक वाला यह अध्ययन ईरा पुरस्कार 2021 की विजेता डॉ. कनिका पठानिया की थीसिस पर आधारित है। उन्होंने 2021 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी।

हाल ही में, भारतीय उद्योग के विभिन्न वर्गों ने विपरीत शुल्क ढांचा या इनवर्टेड ड्यूटी स्ट्रक्चर (आईडीएस) के प्रभाव के बारे में चिंता व्यक्त की है। आईडीएस ऐसी स्थिति है जिसमें किसी उत्पाद के लिए कच्चे माल/इंटरमीडिएट इनपुट के आयात पर शुल्क अंतिम उत्पाद के आयात पर लगाए गए शुल्क से अधिक हो जाता है। भारतीय उद्योगपतियों द्वारा की गई विशिष्ट शिकायत यह है कि कुछ उत्पादों के आयात पर सीमा शुल्क, उनके उत्पादन के लिए आवश्यक इंटरमीडिएट इनपुट पर लगने वाले शुल्क से कम हो गया है। इसने डाउनस्ट्रीम (निचले पायदान वाले) उत्पादकों की कच्चे माल (इनपुट) की लागत को उच्च रखकर उनकी लाभप्रदता को कम कर दिया है, जबकि अपने उत्पादों के लिए उन्हें कड़ी विदेशी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। पिछले कुछ सालों में हर बजट भाषण में देश के वित्त मंत्री ने आईडीएस के कुछ मामलों का उल्लेख किया है, हालांकि यह मुद्दा अब भी कायम है।

पारंपरिक व्यापार सिद्धांत बताता है कि जब देश उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर एकीकरण करना शुरू करते हैं, तो इस पर भी विचार किया जाना चाहिए कि सुरक्षा की प्रभावी दर (ईआरपी) के रूप में क्या संदर्भित किया गया है। कॉर्डन (1971) और बालासा (1965) के जरिए ईआरपी की अवधारणा से पता चलता है कि डाउनस्ट्रीम उद्योगों को प्राप्त सुरक्षा को विपरीत शुल्क ढांचे (आईडीएस) द्वारा कैसे समाप्त किया जा सकता है या उसे पलटा भी जा सकता है। यदि किसी उद्योग के लिए ईआरपी आईडीएस के बावजूद सकारात्मक रहती है, तो बाद में उस उद्योग को प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं कर सकती, क्योंकि शुल्क ढांचा उसे तब भी सुरक्षा देता है। लेकिन यह अलग बात है कि आईडीएस के कारण किसी सेक्टर के लिए ईआरपी नकारात्मक है। ऐसे में, दोनों के बीच संबंध स्थापित करना जरूरी है।

इस पृष्ठभूमि में, यह इस तरह के अध्ययन का पहला प्रयास है कि क्या अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धी बाजार वातावरण के तहत विपरीत शुल्क ढांचे के अस्तित्व के लिए कोई तर्क मौजूद है? दूसरे शब्दों में, क्या कोई विशिष्ट शर्तें हैं जो किसी देश के सामाजिक कल्याण को अधिकतम करते हुए आईडीएस का समर्थन करने वाली शुल्क दरों को इष्टतम नीति समाधान बनाती हैं? यदि हाँ, तो क्या ये शर्तें तभी लागू होती हैं जब विचाराधीन उद्योगों को सकारात्मक रूप से संरक्षित किया जाता है (अर्थात, जब ईआरपी > 0)? या, क्या आईडीएस हमेशा नकारात्मक ईआरपी दर्शाता है? इस अध्ययन में सैद्धांतिक और अनुभवजन्य दोनों तरह से इन सवालों के जवाब देने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन में दो देशों (घरेलू और विदेशी) और दो लंबवत (वर्टिकल रूप से) संबंधित वस्तुओं (एक अंतिम वस्तु और एक मध्यवर्ती इनपुट) के साथ एक सैद्धांतिक मॉडल की रूपरेखा दी गई है, जहां घरेलू सरकार और कंपनियां तीन चरण के खेल में बातचीत करती हैं जैसा कि योजनाबद्ध आरेख (चित्र-1) में दर्शाया गया है। खेल संरचना इशिकावा और स्पेंसर (1999) तथा अन्य द्वारा किए गए कार्यों का बारीकी से अनुसरण करती है। इसका उद्देश्य एक खुली अर्थव्यवस्था में शुल्क ढांचे के निर्धारकों की जांच करना है, विशेष रूप से उन शर्तों को हासिल करने की कोशिश करते हुए, जिसके तहत आईडीएस किसी देश की सरकार के लिए एक इष्टतम नीति बन जाती है। इस प्रकार, पहले चरण में, एक अर्थव्यवस्था में सरकार इष्टतम शुल्क नीतियों पर निर्णय लेती है। दूसरे चरण में, घरेलू और विदेशी इंटरमीडिएट इनपुट उत्पादक कंपनियां मात्रा को लेकर खेलती हैं और इसलिए, उनके मांग कार्यों को देखते हुए, बाजारों में समतुल्यता इनपुट कीमतों का निर्धारण किया जाता है। अंतिम चरण में, अंतिम उत्पादक विभिन्न बाजारों में उत्पादित और बेचे जाने वाले उत्पादों की मात्रा तय करते हैं। इस प्रकार, यह खेल संरचना यह समझने में सक्षम बनाती है कि किसी देश के विभिन्न आर्थिक एजेंटों के निर्णय लेने को प्रभावित करने में शुल्क दरें महत्त्वपूर्ण रूप से अहम भूमिका कैसे निभाती हैं।

विभिन्न पैरामीट्रिक विन्यास (कंफिगरेशन) के आधार पर, यह अध्ययन दर्शाता है कि इनपुट और आउटपुट शुल्क की ऐसी इष्टतम दरें मौजूद हैं जो किसी अर्थव्यवस्था में आईडीएस और नकारात्मक ईआरपी भी पैदा कर सकती हैं। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि आईडीएस हमेशा नकारात्मक ईआरपी के साथ मेल खाता है। वस्तुतः, परिणाम बताते हैं कि एक उद्योग के लिए ईआरपी आईडीएस के बावजूद सकारात्मक रह सकता है। इसका अर्थ है कि बाद वाला उस उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल सकता है, क्योंकि शुल्क संरचना अभी भी उसे सुरक्षा प्रदान कर रही है। बहरहाल, इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता कि कुछ शर्तों के तहत, आईडीएस नकारात्मक ईआरपी के साथ मेल खाता है। उन पैरामीट्रिक विन्यास का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना महत्त्वपूर्ण है। इसके अलावा, अध्ययन से पता चलता है कि देश की शुल्क संरचना के अलावा, व्यापार भागीदारों के बीच विषम मजदूरी और बाजार के आकार भी नकारात्मक प्रभावी सुरक्षा के लिए स्थितियों को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आज वैश्वीकृत दुनिया में, प्रतिस्पर्धा नीतियों की प्रकृति और इससे जुड़े लाभों और लागतों का किसी देश की शुल्क नीतियों पर इनके प्रभाव पर विचार किए बिना अध्ययन नहीं किया जा सकता है। इस अध्ययन से पता चलता है कि कैसे विभिन्न प्रकार के घरेलू विलय किसी देश की शुल्क संरचना को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से, कैसे विभिन्न प्रकार के एकीकरण (विलय), चाहे क्षैतिज या

ऊर्ध्वाधर, इष्टतम इनपुट और आउटपुट शुल्क को प्रभावित करते हैं और इसलिए यह विपरीत शुल्क संरचना और नकारात्मक ईआरपी से संबंधित है। यह फिर से एक दो-देशीय मॉडल को नियोजित करता है, लेकिन स्वदेश में अधिक मध्यवर्ती इनपुट और अंतिम माल उत्पादकों के साथ। योजनाबद्ध आरेख चित्र-1 में दर्शाया गया है।

चित्र-1 : मॉडल संरचना, निर्णय के तीन चरणों और संभावित विलय परिदृश्यों का योजनाबद्ध प्रतिनिधित्व

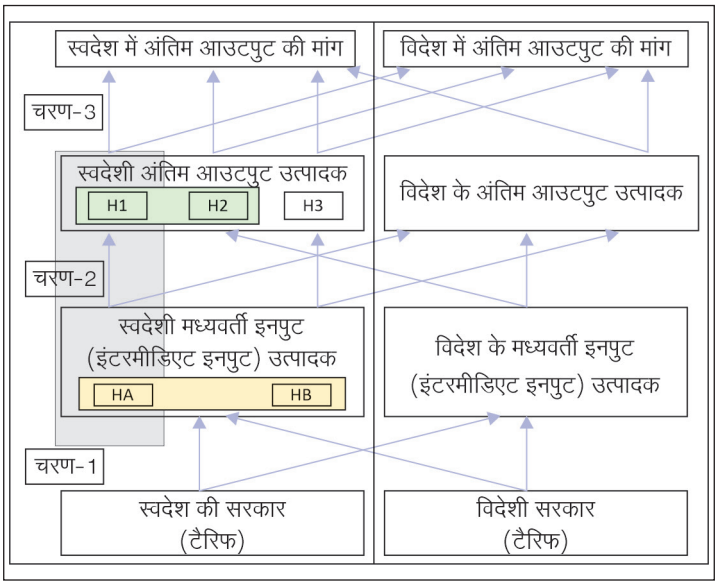

स्रोत : लेखक द्वारा बनाया गया

योजनाबद्ध बेंचमार्क परिदृश्य (`पूर्व-एकीकरण मामला") वह है, जिसमें दोनों देशों में से किसी में भी फर्म की जोड़ी एकीकृत नहीं है। आगे, ऊर्ध्वाधर (वर्टिकल) एकीकरण के मामले पर विचार किया गया था, जहां स्वदेश में अंतिम आउटपुट उत्पादकों में से एक, स्वदेश मध्यवर्ती इनपुट उत्पादक फर्म के साथ एकीकृत होता है (जैसा कि चित्र-1 में ग्रे रंग के ब्लॉक से हाइलाइट किया गया है)। इसके बाद, क्षैतिज एकीकरण के दो अलग-अलग मामलों का विश्लेषण किया गया, जो स्वदेश में दो अंतिम आउटपुट उत्पादकों के बीच क्षैतिज एकीकरण से शुरू हुआ (जैसा कि चित्र-1 में हरे रंग के ब्लॉक में दिखाया गया है)। अगला क्षैतिज एकीकरण का मामला है जो स्वदेश में दो मध्यवर्ती इनपुट उत्पादकों के बीच होता है (जैसा कि चित्र-1 में पीले रंग के ब्लॉक में दर्शाया गया है)। सभी चार मामलों के नीतिगत परिणामों की तुलना यह आकलन करने के लिए की गई थी कि विलय के विभिन्न रूप सामान्य रूप से शुल्क निर्णय, विशेष रूप से आईडीएस और नकारात्मक ईआरपी के बीच संबंध को कैसे प्रभावित करते हैं।

विश्लेषण विभिन्न महत्त्वपूर्ण नीतिगत विचारों का सूचक है। सबसे पहले, अंतिम आउटपुट उत्पादकों में से एक और घरेलू अर्थव्यवस्था के भीतर एक मध्यवर्ती इनपुट निर्माता के बीच ऊर्ध्वाधर एकीकरण का मामला लाभदायक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि इससे सामाजिक कल्याण और एकीकृत फर्मों के लाभ, दोनों में वृद्धि होती है। इसके अलावा, इस प्रकार के एकीकरण में, आईडीएस हमेशा एक इष्टतम नीति साबित होती है। पूर्व-एकीकरण मामले के विपरीत, शुल्क व्युत्क्रम (ड्यूटी इनवर्स) एक आवश्यक, किन्तु नकारात्मक ईआरपी के अस्तित्व के लिए पर्याप्त स्थिति नहीं है। मध्यवर्ती इनपुट चरण पर क्षैतिज एकीकरण के दूसरे मामले में, पूर्व-एकीकरण परिदृश्य की तुलना में, एकीकृत उत्पादकों का मुनाफा बढ़ता है, सामाजिक कल्याण घटता है। इसके अलावा, मध्यवर्ती इनपुट चरण में क्षैतिज एकीकरण भी विपरीत शुल्क संरचना (इष्टतम टैरिफ नीति के रूप में) के अस्तित्व को बढ़ावा देती है और यह शुल्क व्युत्क्रम आवश्यक है, लेकिन नकारात्मक ईआरपी के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार, पहले आकलन के अनुरूप, इस अध्ययन का दूसरा भाग नीति निर्माताओं के लिए (ए) पर विचार करना व आईडीएस और (बी) के मामलों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय ईआरपी प्राप्त करने की आवश्यकता, विभिन्न भारतीय उद्योगपतियों द्वारा उठाई गई चिंताओं को दूर करने के लिए उनकी शुल्क संबंधी नीतियों पर पुनर्विचार या सुधार करने से पहले व्यापार और प्रतिस्पर्धा संबंधी नीतियों के बीच बातचीत को अनिवार्य बना देता है।

कुछ सैद्धांतिक दावों को सत्यापित करने के लिए, इस अध्ययन में 2000-2014 तक की अवधि के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के 24 क्षेत्रों के लिए ईआरपी के नए अनुमान भी प्रस्तुत किए गए हैं। पहले के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए उपयोगों के विपरीत यह वर्ल्ड इनपुट-आउटपुट डेटाबेस (डब्ल्यूआईओडी) का उपयोग करके किया गया है, जो विभिन्न देशों से आयात पर भारत द्वारा लागू विभिन्न शुल्क दरों का प्रयोग करते हुए, प्रत्येक क्षेत्र के लिए ईआरपी पर एक समय श्रृंखला बनाने में सक्षम बनाता है। ये अनुमान विभिन्न भारतीय उद्योगों में आईडीएस के कई उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, लेकिन उनमें से कोई भी नकारात्मक ईआरपी में परिणाम नहीं देता है। विशेष रूप से, आईडीएस विचाराधीन अधिकांश वर्षों के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑप्टिकल उत्पादों, कागज और कागज उत्पादों, कंप्यूटर, फार्मासूटिकल्स, मशीनरी और उपकरण, और अन्य परिवहन उपकरणों में मौजूद है। अध्ययन सांख्यिकीय और अर्थमितीय रूप से भी दिखाता है कि ईआरपी शुल्क वृद्धि की डिग्री से सकारात्मक रूप से संबंधित हैं। आखिर में, निष्कर्ष बताते हैं कि विचाराधीन कुछ वर्षों के लिए कुछ भारतीय उद्योगों में नकारात्मक ईआरपी मौजूद है, लेकिन यह मुक्त व्यापार के तहत नकारात्मक मूल्य वृद्धि के कारण है, न कि विपरीत शुल्क संरचना के कारण (पठानिया और भट्टाचार्य, 2020)। इसलिए, यह अनुभवजन्य पड़ताल इस विषय के समाधान का एक उल्लेखनीय प्रयास है कि भारतीय अर्थव्यवस्था आईडीएस के परिणामों से प्रभावित है या नहीं, और यदि हैं तो किस हद तक।

संक्षेप में, अध्ययन के नतीजे बताते हैं और जैसा कि डेटा से पता चलता है कि विभिन्न भारतीय उद्योगपतियों द्वारा उठाई गई चिंताओं के अनुरूप, विभिन्न क्षेत्रों में शुल्क व्युत्क्रम मौजूद है। बहरहाल, सवाल यह है कि क्या सरकारों को वास्तव में आईडीएस के बारे में चिंतित होना चाहिए? सैद्धांतिक दावे स्पष्ट रूप से बताते हैं कि कुछ शर्तों के तहत, आईडीएस एक अर्थव्यवस्था में सरकार के लिए एक इष्टतम नीति बन जाता है। तात्पर्य यह है कि इस प्रकार के शुल्क ढांचे (कई बार) किसी देश के सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने के लिए आवश्यक होते हैं। किन्तु, यह उद्योगों को कैसे प्रभावित करता है, यह भी विचारणीय है? आईडीएस हानिकारक है, अगर यह नकारात्मक सुरक्षा को बढ़ाता है। सैद्धांतिक और अनुभवजन्य दोनों रूप से वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि आईडीएस का अस्तित्व यह अनिवार्य रूप से संकेत नहीं देता है कि ईआरपी नकारात्मक है। इसलिए, सरकारों के साथ-साथ उद्योगों को वास्तव में ईआरपी के बारे में चिंतित होना चाहिए, न कि विशिष्ट क्षेत्रों में आईडीएस के बारे में। ■

भारत से सॉफ्टवेयर सेवाओं का निर्यात: एक नज़र में

पृष्ठभूमि

बीते एक दशक में भारत के आईटी और आईटी आधारित सेवा (आईटीईएस) क्षेत्र ने उल्लेखनीय प्रगति की है। पूरी दुनिया के लिए भारत अब एक ऐसा केंद्र बन चुका है, जहां कम लागत में उच्च स्तर के विश्वसनीय तकनीकी-समाधान उपलब्ध हो जाते हैं। भारत में आईटी और आईटीईएस उद्योग ने बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर भी पैदा किए हैं। साथ ही, इस क्षेत्र से उल्लेखनीय निर्यात राजस्व भी बना है। हाल ही के वर्षों में अत्याधुनिक तकनीकें, जैसे क्लाउड कंप्यूटिंग, एनालिटिक्स, ब्लॉकचेन, रोबोटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, मशीन लर्निंग आदि इस क्षेत्र की तरक्की की रफ्तार बढ़ा रही हैं। साथ ही साथ विश्व बाजार में भारत की आईटी फर्मों के लिए अवसरों के नए आयाम खोल रही हैं।

भारत से सॉफ्टवेयर सेवाओं का निर्यात

आरबीआई ने 2021-22 में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर एवं सूचना-प्रौद्योगिकी से संबद्ध सेवाओं के निर्यात से संबंधित एक सर्वेक्षण किया। उसके अनुसार, 2021-22 में सॉफ्टवेयर सेवाओं का भारत का कुल निर्यात करीब 171.9 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। इस तरह, 2021-22 में भारत से सेवाओं का जितना भी निर्यात हुआ, उसमें 67.5% भागीदारी सॉफ्टवेयर सेवाओं के खाते में ही गई। बीते वर्षों में भारत के सॉफ्टवेयर निर्यात में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष 2017-18 से 2021-22 के दौरान इसमें 7.0% की सीएजीआर दर्ज की गई। धनराशि के लिहाज से 2017-18 में जहां भारत से सॉफ्टवेयर निर्यात 131.2 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, वहीं 2021-22 में 171.9 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। भारत के सॉफ्टवेयर निर्यात ने 15.9% की दर से वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर्ज की है। यह पिछले कुछ वर्षों में सर्वोच्च वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि रही।

जहां तक सॉफ्टवेयर सेवाओं की आपूर्ति के माध्यमों की बात है तो 2021-22 में भारत के सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात में करीब 80.9% की सबसे बड़ी हिस्सेदारी देश से बाहर की गई आपूर्ति (मोड-1) के जरिए रही। इसके बाद 10.2% की हिस्सेदारी के साथ स्वाभाविक व्यक्तियों के गमनागमन (मोड-4) से जुड़े तरीके और फिर वाणिज्यिक उपस्थिति (8.8%) का स्थान रहा। उल्लेखनीय है कि बढ़ते डिजिटलीकरण के चलते हाल के वर्षों में देश से बाहर (माध्यम-1) सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात ने लगातार रफ्तार पकड़ी है। जबकि वाणिज्यिक उपस्थिति के माध्यम से आपूर्ति की हिस्सेदारी करीब-करीब ठहर-सी गई है। वर्ष 2017-18 में पहले मोड से भारत का सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात 69.5% दर्ज किया गया, जो 2021-22 में बढ़कर 80.9% हो गया। वहीं दूसरी तरफ, तीसरे-मोड के माध्यम से हुए निर्यात का हिस्सा 2017-18 में 17.4% रहा और 2021-22 में घटकर 8.8% हो गया। इस बीच, चौथे-मोड से निर्यात की हिस्सेदारी भी 2017-18 की तुलना में 2021-22 में 13% से घटकर 10.2% रह गई।

भारत से सॉफ्टवेयर निर्यात की दिशा और संरचना

सॉफ्टवेयर निर्यात में वृद्धि मुख्य रूप से कंप्यूटर से जुड़ी सेवाओं से संचालित होती है। विशेष रूप से आईटी सेवाओं से। वर्ष 2021-22 में सॉफ्टवेयर सेवाओं के कुल निर्यात[1] में आईटी सेवाओं की हिस्सेदारी लगभग 64.9% रही है। इस खंड यानी आईटी सेवाओं के निर्यात की वृद्धि भी मुख्य रूप से सॉफ्टवेयर परीक्षण और एप्लीकेशन सेवाओं की होस्टिंग से संचालित होती है। इसके अलावा अन्य सेवाएं भी हैं। सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात के अन्य खंडों में बीपीओ सेवाएं शामिल हैं। वर्ष 2021-22 में भारत के कुल सॉफ्टवेयर निर्यात में इसकी हिस्सेदारी 27% रही। इसके बाद आईटी आधारित इंजीनियरिंग से जुड़ी सेवाएं (5.2% हिस्सा) और सॉफ्टवेयर उत्पाद विकास सेवाएं (2.9%) शामिल रहीं। बीपीओ सेवाओं के निर्यात के तहत एनालिटिक्स, रोबोटिक प्रॉसेस ऑटोमेशन (आरपीए) चैट-बॉट्स आदि वृद्धि के उभरते क्षेत्र रहे। इसी दौरान, इंजीनियरिंग सेवाओं के खंड में वृद्धि मुख्य रूप से एईसीएस यानी ऑटोमोनस, इलेक्ट्रिफिकेशन कनेक्टिविटी और शेयर्ड मोबिलिटी से जुड़ी सेवाओं से संचालित रही।

भारत की सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात के लिए अमेरिका और कनाडा शीर्ष बाजार हैं। वर्ष 2021-22 में दोनों की भारत की सॉफ्टवेयर सेवाओं के कुल निर्यात[2] में 55.5% की हिस्सेदारी रही। इसके बाद यूके (14.9% हिस्सा) का स्थान रहा। अन्य में ईयू (16.1%), ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड (2.9%) शामिल रहे। भारतीय कंपनियों के विदेशी सहबद्ध या साझेदारों के कारोबार (तीसरा-मोड) में भी फिर यूएसए ही सबसे बड़ा आयातक रहा। वर्ष 2021-22 में भारत से तीसरे-मोड के कुल सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात में यूएसए हिस्सेदारी 42.5% की रही। इसके बाद अन्य में यूके (23.5% हिस्सा), जर्मनी (5.8%), कनाडा (5.6%), सिंगापुर (4.5%) और नीदरलैंड प्रमुख रहे।

निकट भविष्य में संभावनाएं

'केयर एज रिसर्च' के अनुसार विश्व में सॉफ्टवेयर और डाटा-संचालित तकनीकी समाधान की मांग लगातार बढ़ रही है। इसके नतीजे में डिजिटल रूपांतरण से जुड़ी पहलों पर खर्च भी बढ़ा है। यह भारत के आईटी क्षेत्र के लिए एक अच्छा संकेत है। क्लाउड-कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर-सुरक्षा, डाटा एनालिटिक्स और आईओटी, अन्य विषयों के साथ ही इस क्षेत्र की वृद्धि के प्रमुख कारक हो सकते हैं। हालांकि विश्व स्तर पर वृहद्-आर्थिक मंदी के हालात से कुछ अनियमितताएं भी पैदा हुई हैं। विशेष रूप से मुख्य रूप से यूएसए, यूके और ईयू में मंदी के हालात हैं। इसके अलावा मुद्रा की अस्थिरता भी एक मसला है, जिससे कुछ कॉर्पोरेट प्रौद्योगिकी समाधानों पर खर्च को स्थगित कर सकते हैं। इससे निकट भविष्य में बचत और लाभ की स्थितियां प्रभावित हो सकती हैं। इसके बावजूद मध्यम अवधि में डिजिटल-कायांतरण पर दुनियाभर में बढ़ रहे खर्च के मामले में तेजी देखने को मिल सकती है। जाहिर तौर पर इसका सबसे अधिक सकारात्मक असर भारतीय आईटी क्षेत्र पर पड़ने वाला है। घरेलू बाजार से भी आईटी क्षेत्र का राजस्व मजबूत रह सकता है। इसे सरकार द्वारा की गई डिजिटल-इंडिया, स्टार्ट-अप इंडिया, स्मार्ट सिटी और डिजिटल भुगतान जैसी विभिन्न पहलों से लगातार समर्थन मिल रहा है। ■

[1] तीसरे-मोड के निर्यात को छोड़कर, जैसे- भारतीय कंपनियों के विदेशी सहबद्ध या साझेदारों का व्यवसाय

[2] तीसरे-मोड के निर्यात को छोड़कर, जैसे- भारतीय कंपनियों के विदेशी सहबद्ध या साझेदारों का व्यवसाय

इंडिया एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं

ऋण-व्यवस्थाएं संप्रभु सरकारों को या उनकी नामित एजेंसियों को प्रदान की जाती हैं, ताकि उन देशों में क्रेता भारत से माल और सेवाओं का आस्थगित भुगतान शर्तों पर आयात कर सकें। बैंक द्वारा यथा 22 दिसंबर, 2022 को अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशिआनिया और सीआईएस क्षेत्रों के 62 देशों को 28.1 बिलियन यूएस डॉलर की ऋण प्रतिबद्धता के साथ 275 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण-व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने अक्टूबर-दिसंबर 2022 के दौरान भारत सरकार की ओर से निम्नलिखित दो ऋण-व्यवस्था करारों पर हस्ताक्षर किए :

भारत सरकार की ओर से मालदीव सरकार को 100 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की गई। यह ऋण-व्यवस्था मालदीव में नई विकास परियोजनाओं के वित्तपोषण और विकास परियोजनाओं की अतिरिक्त लागत के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई। इंडिया एक्ज़िम बैंक द्वारा प्रदान की गई यह ऋण-व्यवस्था मालदीव को पहले से प्रदत्त ऋण-व्यवस्था के तहत शामिल है। इस ऋण-व्यवस्था करार पर हस्ताक्षर के साथ ही एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से मालदीव सरकार को अब तक 1,460 मिलियन यूएस डॉलर की कुल छह ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। मालदीव सरकार को प्रदत्त ये ऋण-व्यवस्थाएं विभिन्न परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई हैं। इनमें 485 आवासीय इकाईयों का निर्माण, सड़क निर्माण, विकास परियोजनाएं, ग्रेटर माले में संपर्क (माले से थिलाफुशी जोड़) परियोजना, खेलों के लिए आधारभूत ढांचा विकसित करने, रक्षा परियोनाएं आदि प्रमुख हैं। इनके अलावा, 500 आवासीय इकाइयों के निर्माण और सड़क विकास से संबंधित परियोजना पूरी हो चुकी है। इस परियोजना पर 14.4 मिलियन यूएस डॉलर की लागत आई। अन्य परियोजनाएं विकास के विभिन्न चरणों में हैं।

भारत सरकार की ओर से मॉरीशस सरकार को 300 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की गई। यह ऋण-व्यवस्था मॉरीशस मेट्रो एक्सप्रेस प्रोजेक्ट के चौथे चरण के लिए प्रदान की गई है। इस चरण में रेड्युट से सेंट पायरी और कोत दि'वार क्षेत्र तक काम चल रहा है। इस ऋण-व्यवस्था करार पर हस्ताक्षर के साथ एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से मॉरीशस सरकार को अब तक1,029.8 मिलियन यूएस डॉलर की कुल सात ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। मॉरीशस सरकार को प्रदान की गई इन ऋण-व्यवस्थाओं के जरिए कई परियोजनाएं पूरी की जानी हैं। इनमें मेसर्स गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स से अपतटीय पैट्रोल नौकाओं की खरीद, मॉरीशस पुलिस बल (एमपीएफ) के लिए रक्षा उपकरणों एवं वाहनों की सर्विसिंग तथा रखरखाव और उन्नयन, वॉटरजेट फास्ट अटैक क्राफ्ट संबंधी परियोजना का वित्तपोषण एवं अधिग्रहण, ट्राइडेंट परियोजना (इसमें बर्थिंग जेट्टी और नेशनल कॉस्ट गार्ड ऑफ मॉरीशस के मुख्यालय भवन का निर्माण), विभिन्न इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए इक्विटी सहभागिता, भारत से रक्षा सामान की खरीद, मॉरीशस मेट्रो एक्सप्रेस प्रोजेक्ट के चौथे चरण (जो रेड्युट से सेंट पायरी और कोट दि'वार क्षेत्र तक चल रहा है) की परियोजनाएं प्रमुख हैं। इनके अलावा 102.4 मिलियन यूएस डॉलर की छह अन्य परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। अन्य परियोजनाएं विकास के विभिन्न चरणों में हैं।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

श्री विक्रमादित्य उगरा,
मुख्य महाप्रबंधक
भारतीय निर्यात-आयात बैंक,
ऑफिस ब्लॉक, टॉवर 1, 7वीं मंज़िल, एड्जेसेंट रिंग रोड,
किदवई नगर (पूर्व), नई दिल्ली 110023,
फोन : +91-11-24607700
ई-मेलः eximloc@eximbankindia.in

दास्तान-ए-कामयाबी

मॉरीशस सरकार को भारत सरकार के सहयोग से इंडिया एक्ज़िम बैंक की 465 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने मॉरीशस सरकार को भारत सरकार के सहयोग से 465 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की। यह ऋण-व्यवस्था विभिन्न इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए इक्विटी प्रतिभागिता के लिए प्रदान की गई थी। इस ऋण-व्यवस्था संबंधी करार पर 27 मई, 2017 को हस्ताक्षर किए गए थे।

परियोजना का विवरण: इसके अंतर्गत कॉन्ट्रैक्ट वरिंदेरा कंस्ट्रक्शंस लिमिटेड और नैशनल हाउसिंग डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, मॉरीशस के बीच किया गया और 05 जून, 2019 को ऋण-व्यवस्था के अंतर्गत शामिल किया गया।

परियोजना के कार्यक्षेत्र में सामाजिक आवासन के तहत मॉरीशस में मारे टैबैक और डैगोटेयर में 4 हाउस यूनिट G+1 कंफिगरेशन वाली 956 इकाइयों का निर्माण कार्य शामिल रहा। दो कमरों, एक लिविंग और डाइनिंग रूम, रसोई और शौचालय से लैस प्रत्येक आवासीय इकाई 69 वर्गमीटर की थी। इस परियोजना में संपर्क सड़क, जल आपूर्ति, सीवरेज, जल निकासी और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं जैसे अन्य बुनियादी ढांचागत कार्य भी शामिल थे।

परियोजना की कुल लागत: 25,000,000 यूएस डॉलर

परियोजना 20 जनवरी, 2022 को सफलतापूर्वक पूरी हो गई।

तिमाही गतिविधियां

भारत-बांग्लादेश व्यापार को सुगम बनाने के लिए इंडिया एक्ज़िम बैंक ने पांच बांग्लादेशी बैंकों के साथ इशूइंग बैंक करार किए

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (इंडिया एक्ज़िम बैंक) ने 16-17 अक्टूबर, 2022 के दौरान पांच बांग्लादेशी बैंकों के साथ इशूइंग बैंक करार किए। अपनी नई व्यापार सुगमीकरण पहल, "व्यापार सहायता कार्यक्रम" (टैप) के तहत ये करार म्यूचुअल ट्रस्ट बैंक लिमिटेड, ढाका बैंक लिमिटेड, बैंक एशिया लिमिटेड, मिडलैंड बैंक लिमिटेड और शाहजलाल इस्लामी बैंक के साथ किए गए।

इन करारों पर हस्ताक्षर के दौरान, इंडिया एक्ज़िम बैंक के मुख्य वित्तीय अधिकारी श्री तरुण शर्मा ने उल्लेख किया कि पिछले कुछ महीनों में, इंडिया एक्ज़िम बैंक ने बांग्लादेश के साथ करीब 20 मिलियन यूएस डॉलर के कई व्यापार ट्रांज़ैक्शनों को सहयोग दिया है। यह सहयोग कृषि सहित ऑटोमोटिव पार्ट्स, पूंजीगत और इंजीनियरिंग सामान, लौह और इस्पात तथा टेक्स्टाइल जैसे कई क्षेत्रों में व्यापार के लिए दिया गया है। उपरोक्त 5 बैंकों के साथ इशूइंग बैंक करार करने से भारत-बांग्लादेश के बीच व्यापार को सहयोग के और भी द्वार खुलेंगे और इससे इन पांचों बैंकों को भारत में बड़ी संख्या में मौजूद वाणिज्यिक बैंकों के साथ कार्यसंबंध बनाने का मौका मिलेगा।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने 17 अक्टूबर, 2022 को ढाका में टैप पर एक चर्चापरक सत्र का भी आयोजन किया। इसमें भागीदार बैंकों को इसके उद्देश्य, प्रक्रिया और दस्तावेज़ीकरण के बारे में जानकारी दी गई। इस सत्र में बांग्लादेश के स्थानीय बैंकों से लगभग 50 बैंकरों ने हिस्सा लिया।

गिफ्ट सिटी आधारित आईटीएफएस प्लैटफॉर्म के जरिए निर्यात प्राप्य राशियों के वित्तपोषण के लिए इंडिया एक्ज़िम बैंक ने आरएक्सआईएल ग्लोबल के साथ करार किया

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने 28 नवंबर, 2022 को रिसीवेबल्स एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (आरएक्सआईएल) की सहायक कंपनी, आरएक्सआईएल ग्लोबल आईएफएससी लिमिटेड (आरएक्सआईएल ग्लोबल) के साथ मास्टर करार पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य गुजरात के गांधीनगर स्थित गिफ्ट सिटी में आईटीएफएस प्लैटफॉर्म के जरिए निर्यात प्राप्य राशियों का वित्तपोषण करना है। इस करार पर इंडिया एक्ज़िम बैंक के उप प्रबंध निदेशक श्री एन. रमेश और आरएक्सआईएल के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री केतन गायकवाड़ द्वारा हस्ताक्षर किए गए। आईटीएफएस भारत सरकार की एक पहल है, जिसके जरिए निर्यातकों और आयातकों के लिए व्यापार वित्त को सुगम बनाने के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक प्लैटफॉर्म तैयार किया जा रहा है। यह प्लैटफॉर्म विभिन्न निवेशकों तक इनकी पहुंच बढ़ाने में मदद करेगा। साथ ही, अन्य के साथ-साथ फैक्टरिंग और अन्य व्यापार वित्त सेवाओं के जरिए वैश्विक संस्थानों से निर्यातकों और आयातकों के लिए प्रतिस्पर्धी लागत पर ऋण की व्यवस्था करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस करार से इंडिया एक्ज़िम बैंक भारतीय कंपनियों को फैक्टरिंग और अन्य व्यापार वित्त उत्पाद प्रदान कर सकेगा और एमएसएमई तक इन उत्पादों की पहुंच बढ़ाई जा सकेगी। इंडिया एक्ज़िम बैंक, आरएक्सआईएल के प्लैटफॉर्म के सैंडबॉक्स ट्रांज़ैक्शनों में भी शामिल हो सकेगा।

इंडिया एक्ज़िम बैंक और कैरेब एक्सपोर्ट्स का संयुक्त शोध अध्ययन

इंडिया एक्ज़िम बैंक और कैरेबियाई निर्यात विकास एजेंसी (सीईडीए) के संयुक्त शोध अध्ययन का विमोचन 11 नवंबर, 2022 को त्रिनिदाद और टोबैगो में "कैरेबियाई निवेश फोरम" के दौरान किया गया। इसका शीर्षक है- "भारत-कैरीफोरम सहयोग के लिए आपसी आर्थिक संबंधों और संभावनाओं को बढ़ाना"। इसका विमोचन श्री राजू शर्मा, उपराजदूत, त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय उच्चायोग के कर कमलों से हुआ। इस दौरान श्री लिओ नॉट, उप कार्यकारी निदेशक (दाईं ओर), कैरेबियाई निर्यात विकास एजेंसी (सीईडीए) भौतिक रूप से और इंडिया एक्ज़िम बैंक के उप प्रबंध निदेशक श्री एन. रमेश वर्चुअल रूप से उपस्थित रहे।

इस शोध अध्ययन में भारत और कैरेबियाई क्षेत्रों के लिए व्यापार, निवेश और परस्पर सहयोग के क्षेत्रों में मौजूद विभिन्न अवसरों का उल्लेख किया गया है।

इंडिया एक्ज़िम बैंक के व्यापार सहायता कार्यक्रम (टैप) से जुड़ा दक्षिण अफ्रीका का अब्सा बैंक लिमिटेड

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने दक्षिण अफ्रीका के अब्सा बैंक लिमिटेड (एबीएसए) के साथ इशूइंग बैंक करार किया है। यह करार अब्सा बैंक के मैनेजिंग एक्ज़ीक्यूटिव श्री आनंद नायडू के नेतृत्व में आए एक प्रतिनिधिमंडल के दौरे के दौरान मुंबई में 10 नवंबर, 2022 को किया गया। इस करार पर इंडिया एक्ज़िम बैंक के उप प्रबंध निदेशक श्री एन. रमेश और श्री आनंद नायडू द्वारा हस्ताक्षर किए गए और इस तरह इंडिया एक्ज़िम बैंक की व्यापार सुगमीकरण की दिशा में की गई नई पहल "व्यापार सहायता कार्यक्रम" (टैप) से अब्सा भी जुड़ गया है।

इंडिया एक्ज़िम बैंक का पूर्वानुमान, वित्तीय वर्ष 2023 की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) में भारत का मर्चैंडाइज़ निर्यात 100.5 बिलियन यूएस डॉलर तथा गैर-तेल निर्यात 80.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहेगा

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने वित्तीय वर्ष 2022-23 की तीसरी तिमाही यानी अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के लिए भारत के कुल मर्चैंडाइज़ निर्यातों और गैर-तेल निर्यातों के लिए पूर्वानुमान जारी कर दिए हैं। इसके मुताबिक, भारत के कुल मर्चैंडाइज़ निर्यात, वित्तीय वर्ष 2023 की तीसरी तिमाही में, 100 बिलियन यूएस डॉलर से ऊपर (100.5 बिलियन यूएस डॉलर) रहने का पूर्वानुमान है। यह पिछले वर्ष की इसी तिमाही में 5.9% के संकुचन के बावजूद है। गैर-तेल निर्यात इसी अवधि के दौरान 80.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहने का पूर्वानुमान है। इसमें पिछले वर्ष की तुलना में 9.7% का संकुचन रहा है। भारत के निर्यात पर वैश्विक ऊर्जा संकट, दुनियाभर में सख्त मौद्रिक और वित्तीय स्थितियों, प्रमुख व्यापार भागीदार देशों में जारी मंदी और रूस-यूक्रेन संघर्ष के छाया रह सकती है। हालांकि इस तिमाही के पहले दो महीनों के दौरान थोड़ा गिरावट का रुख दिख सकता है। तथापि हाल ही में घरेलू नीतिगत परिवर्तनों और बाहरी परिवेश में सुधार की संभावनाओं के चलते आने वाले महीनों में भारत के निर्यात में सुधार होने की उम्मीद है। ■

देशों का अवलोकन

ब्राज़ील

ब्राज़ील की वास्तविक जीडीपी में वृद्धि वर्ष 2022 में 2.7% रही। लेकिन यह इस वर्ष यानी 2023 में 0.7% के आसपास तक नीचे जा सकती है। इस तेज गिरावट के पीछे तीन प्रमुख कारण नजर आते हैं। पहला- वैश्विक अर्थव्यवस्था में तेज मंदी। दूसरा- ब्राज़ील में घरेलू स्तर पर ऊंची ब्याज दरें और तीसरा- महंगाई। वहां ऋण लागत लगातार बढ़ रही है। साख की स्थिति भी बिगड़ रही है। साख में बढ़त की दर बहुत धीमी है। ऊपर से अपराध की दर भी ज्यादा है। इस सबसे हालात और ज्यादा बिगड़ने की आशंका है। सख्त मौद्रिक नीति, करों में कटौती और वस्तुओं के वैश्विक मूल्य में उतार जैसी स्थितियों के कारण उम्मीद है कि वर्ष 2023 में मुद्रास्फीति वर्ष 2022 की 9.3% के मुकाबले घटकर 4.7% रह सकती है। रियाल की कीमत भी कम हो सकती है। वर्ष 2022 में एक यूएस डॉलर की कीमत 5.17 रियाल रही। वहीं 2023 में यह यूएस डॉलर के मुकाबले 5.25 रियाल तक हो सकती है। वस्तुओं के मूल्य में कमी से 2023 में व्यापार-अधिशेष की स्थिति में कमी आ सकती है। इससे चालू खाता घाटा और बढ़ने की आशंका है। वर्ष 2022 में यह जीडीपी का 2.4% रहा, जो 2023 में 2.7% हो सकता है। देश का संरचनात्मक व्यापार अधिशेष, विदेश ऋण के अनुपात और सुविधाजनक आरक्षित भंडार ब्राज़ील की बाहरी स्थिति के जोखिम को थोड़ा कम कर सकता है। सार्वजनिक बाहरी ऋण कम है और निजी बाहरी ऋण में नरमी के बावजूद अधिकांश कंपनियों ने अपने पास किसी न किसी तरह की मौद्रिक व्यवस्था कर रखी है।

गेबॉन

तेल का उत्पादन 2022 में सस्टेनेबल क्षमता तक बढ़ा है। इससे वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर इस वर्ष 3.6% तक रह सकती है। इमारती लकड़ी और भवन-निर्माण के क्षेत्र में वृद्धि भी आर्थिक उत्पादन बढ़ा सकती है। वर्ष 2023 में आर्थिक वृद्धि की दर बढ़कर 3.5% तक रह सकती है। इसे सेवाओं और कृषि क्षेत्रों में उच्च वृद्धि दर से अच्छा सहयोग मिला है। साथ ही इमारती लकड़ी और भवन-निर्माण के क्षेत्र में भी लगातार मजबूती बनी हुई है। वर्ष 2022 में महंगाई 4.6% के औसत तक बढ़ सकती है, क्योंकि वैश्विक स्तर पर खाद्य और ऊर्जा की लागत पर ऊंची कीमतों का दबाव बना हुआ है। सब्सिडी जैसे उपायों से इसे आंशिक तौर पर ही सीमित किया जा सकता है। वर्ष 2023 में मुद्रास्फीति 4.4% के स्तर तक ऊपर ही रह सकती है। वहीं सीएफए फ्रैंक की कीमत यूएस डॉलर के मुकाबले सुधर सकती है। इसका मूल्य 2022 में एक यूएस डॉलर के मुकाबले 609.1 सीएफए फ्रैंक रहा। जबकि 2023 में एक यूएस डॉलर 576.7 सीएफए फ्रैंक के बराबर रह सकता है। इसका कारण है कि ईसीबी अपनी सख्त नीतियों के रुख पर कायम है। चालू खाता 2022 में अधिशेष की स्थिति में रह सकता है। लेकिन 2023-26 के बीच इसमें घाटे की स्थिति बनने की आशंका है। तेल की कीमतों की जो चाल दिखाई दे रही है, उससे यह संभावना बनती है। वर्ष 2022 में अधिशेष जीडीपी के 1.3% तक रह सकता है। इसे तेल के उच्च निर्यात से हुई आमदनी के कारण मजबूत बाहरी स्थिति से काफी समर्थन मिला है। वहीं 2023-26 के दौरान घाटा जीडीपी के 2.4% के औसत पर रह सकता है। इसके दो कारण माने जा रहे हैं। पहला- तेल की कीमतों में लगातार गिरावट आ रही है। वहीं, व्यापार अधिशेष की स्थिति भी बिगड़ रही है।

कैमरून

वर्ष 2023 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 4.5% तक जा सकती है, जबकि 2021 में यह 3.7% दर्ज की गई। क्रीबी में गहरे जल का बंदरगाह विकसित किया गया है। इससे खनन उद्योग, विशेष रूप से लौह-अयस्क के खनन में काफी मदद मिली है। साथ ही निर्यात की स्थिति में भी सुधार हुआ है। हिली एपीसेयो के तैरते एलएनजी टर्मिनल की बढ़ी हुई क्षमता ने भी आर्थिक गतिविधियों में तेजी लाने में मदद की है। हालांकि आने वाले वर्षों में तेल उत्पादन में कमी की आशंका है। कारण यह है कि तेल-क्षेत्र अपने दोहन के अधिकतम स्तर तक पहुंच रहे हैं। मुद्रास्फीति में वर्ष 2023 में थोड़ी राहत मिल सकती है। यह 2022 में 5.6% रही लेकिन 2023 में 4.1% के औसत पर रह सकती है। इसकी वजह यह है कि वस्तुओं के वैश्विक मूल्य में गिरावट आई है। आपूर्ति का स्तर सुधरा है। साथ ही घरेलू स्तर पर यूएस डॉलर के मुकाबले मुद्रा भी मजबूत हुई है। वर्ष 2022 के अंत में एक यूएस डॉलर के मुकाबले सीएफए फ्रैंक 679.7 के स्तर पर रहा। वहीं, 2023 के अंत में एक डॉलर के मुकाबले सीएफए फ्रैंक 646.3 के स्तर पर रह सकता है। चालू खाता घाटा लगातार संकुचित हो सकता है। वर्ष 2022 में यह जीडीपी के लगभग 6.6% पर रहा। वहीं 2027 तक जीडीपी के 3.2% के स्तर पर पहुंच सकता है। व्यापार घाटे की स्थिति भी कुछ इसी तरह की रह सकती है। चालू खाते के घाटे को मुख्य रूप से रियायती ऋण और आधिकारिक लेनदारों से जुटाई गई रकम तथा एलएनजी क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से वित्तपोषण मिल सकता है।

घाना

वर्ष 2022 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 3.3% तक मंदी रही। यह 2023 में 1.9% के स्तर तक मंदी रह सकती है। अगर ऐसा होता है, तो वर्ष 2020 में लगे कोरोना वायरस के झटके के बाद दूसरी बार यह ऐसी स्थिति बनेगी। जीवन-यापन पर आने वाले खर्चों में और ज्यादा कसावट आई है। केंद्रीय बैंक बीओजी ने मौद्रिक सख्ती बरती है। राजकोष में भी कटौती की स्थिति बनी है। इस सबसे वर्ष 2014 के बाद पहली बार घरेलू मांग संकुचित हो सकती है। औसत उपभोक्ता मुद्रास्फीति 2023 में कुछ नीचे आ सकती है। लेकिन पूरे साल के औसत की बात करें तो यह 22.6% के ऊंचे स्तर पर ही रहने का अनुमान है। कारण कि वस्तु एवं उत्पादों की कीमतें 2022 के स्तर से नीचे आई हैं। वहीं मौद्रिक सख्ती ने भी घरेलू मांग पर असर डाला है। मुद्रा सेडी में अब तक बड़ी तेज गिरावट देखी गई। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि 2023 के मध्य में आईएमएफ कार्यक्रम को मंजूरी मिलने और सख्त मौद्रिक नीति और राजकोषीय सख्ती से इस गिरावट को कुछ हद तक थाम लिया जाएगा। इससे वर्ष 2023 में घानियन सेडी का मूल्य एक यूएस डॉलर के मुकाबले 17.53 तक पहुंचने की उम्मीद है। चालू खाता घाटा 2022 में जीडीपी के 5% के आसपास रहा, जो 2023 में जीडीपी के 1.5% तक पहुंच सकता है। वहीं 2024 में तो यह घाटा जीडीपी के 0.3% तक संकुचित हो सकता है। इसका मुख्य कारण वैश्विक स्तर पर परिशोधित ईंधन के आयात मूल्य में गिरावट आना है। जबकि 2022 में यह आयात मूल्य चरम पर रहा। इसके अलावा घरेलू मांग में भी कमी आई है। साथ ही आयात पर नियामक सख्ती बढ़ाने से भी आयात बिल कम हुआ है। ■

मुद्राओं की स्थिति

यूएस डॉलर

US$ दिसंबर 2022 में ही फेडरल रिज़र्व ने अपनी एक बैठक के दौरान नीतिगत दरों को 50 बीपीएस तक बढ़ाने का फैसला लिया। इसके बाद नीतिगत दरें 2007 के बाद से 4.50% के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई हैं। हालांकि मुद्रास्फीति से मुकाबले को देखते हुए अब भी यह संभावना है कि 2023 में फेड फंड की लक्षित दरें 5.00% से 5.25% तक हो सकती हैं। डॉलर सूचकांक से ग्रीनबैक (कागजी डॉलर) की तुलना में छह अन्य बड़ी मुद्राओं का आकलन किया जाता है। इसमें दो बार गिरावट देखी गई है। पहली बार जब मुद्रास्फीति के आंकड़े आए तो यह सूचकांक 105.13 से 103.98 पर आया। फिर जब नीतिगत दरें बढ़ाई गईं तो यह 103.77 पर आ गया।

वैसे, मुद्रास्फीति से इस तरह के संकेत मिल रहे हैं कि यह अब नीचे आएगी। क्योंकि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक नवंबर के महीने में 7.10% तक ऊपर गया है। यह उम्मीद से कम ही बढ़त है। इसकी वजह ये रही कि आपूर्ति की स्थिति में कुछ सहजता आई है। चीन के मोर्चे पर भी कुछ कमजोरी देखी गई, जिसका वैश्विक वस्तु-मूल्यों पर काफी असर रहता है। हालांकि सीपीआई के ऊपर की तरफ जाने का सिलसिला कुछ धीमा हुआ है, इसके बावजूद अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति का स्तर अब भी ज्यादा है। फेडरल रिज़र्व ने इसका स्तर 2.00% तक लाने का लक्ष्य रखा है। ऊर्जा आयात पर भारत की निर्भरता के कारण तेल की कीमतों में कमजोरी का यूएस डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये पर काफी असर होता है। संभवतः यही कारण रहा कि चालू वर्ष में यूएस डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया 73.77 और 83.29 के बीच रहा।

यूएस डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया 19 दिसंबर, 2022 को 82.7050 पर बंद हुआ।

ऑस्ट्रेलियन डॉलर

A$ बढ़ती कीमतों से मुकाबले के लिए रिज़र्व बैंक ने बीते 33 वर्षों में सबसे अधिक सख्त नीतियां अपनाने का सिलसिला चलाया। इसका नतीजा ये हुआ कि ऑस्ट्रेलियाई उपभोक्ताओं का रुख बाजार की तरफ बहुत उदासीन रहा। साथ ही कारोबारी भरोसा भी साल में पहली बार नकारात्मकता का शिकार हुआ। उपभोक्ताओं का रुख हालांकि दिसंबर में 3% बेहतर होकर 80.3 पर पहुंचा है। ढाई साल पहले 78.0 प्वाइंट के स्तर से यह ठीक सुधार रहा। फिर भी आशावादियों पर निराशावादी ही हावी रहे। नवंबर में कारोबारी भरोसे की स्थिति -4 पर आ गई। दिसंबर 2021 में शून्य से कुछ ऊपर की स्थिति के बाद यह सबसे खराब हालत रही।

बाजार के उदासीन रुख और आर्थिक मंदी की आशंकाओं के बीच यूएस डॉलर के मुकाबले ऑस्ट्रेलियाई डॉलर भी लुढ़क गया। यूएस फेडरल रिजर्व, बैंक ऑफ इंग्लैंड और यूरोपियन सेंट्रल बैक द्वारा 50 बेसिस प्वाइंट तक की दरें बढ़ाए जाने के बाद ऑस्ट्रेलियाई डॉलर की स्थिति ज्यादा खराब हुई। चीन से सामने आए आर्थिक आंकड़ों ने भी नवंबर में आर्थिक गतिविधियों पर नकारात्मक असर डाला। सरकार ने शून्य कोविड नीति को भी बीच में ही छोड़ दिया। इसका असर भी उल्टा हुआ। वस्तुओं, उत्पादों का मूल्य और ब्याज दरों का अंतर भी यूएस डॉलर की तुलना में ऑस्ट्रेलियाई डॉलर के लिए विपरीत असर वाला साबित हुआ। दिसंबर में हुई नीति-निर्धारण संबंधी बैठक के दौरान रिज़र्व बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया ने दरों में 25 बेसिस प्वाइंट की बढ़ोत्तरी का निर्णय लिया। इससे ये दरें 3.10% पर पहुंच गईं।

इसके बाद एक यूएस डॉलर के मुकाबले ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का मूल्य जो 0.6666 और 0.6893 के बीच चल रहा था, वह 19 दिसंबर 2022 को 0.6699 हो गया।

हॉन्गकॉन्ग डॉलर

HK$ बीते छह महीने से हॉन्गकॉन्ग डॉलर (एचकेडी) का अपने मुद्रा-बैंड में अधिकांशतः कमजोर ही रहा है। इससे करीब 40 साल के अंतराल के बाद फिर इसे लेकर नई तरह की आशंकाएं जताई जाने लगी हैं। स्थानीय बाजार से पैसा जुटाने की लागत बढ़ती जा रही है। जाहिर तौर पर इससे मुद्रा के एवज में कारोबार करने की स्थितियां भी विपरीत रूप से प्रभावित हुईं, क्योंकि एक यूएस डॉलर की तुलना में साल की शुरुआत में ही एचकेडी का मूल्य 7.75 से 7.85 रहा। यह आगे चलकर और कमजोर हुआ। मार्च के महीने से ही फेडरल रिजर्व ने अपनी हर मीटिंग में मुख्य दरों को बढ़ाया। वर्ष 1994 के बाद से यह सबसे आक्रामक मौद्रिक सख्ती है। चूंकि यूएस डॉलर की तुलना में एचकेडी का मूल्य 7.75 से 7.85 के नजदीकी दायरे में रहा, ऐसे में हॉन्गकॉन्ग की मौद्रिक नीति भी यूएस की नीति के साथ प्रभावित रही। हॉन्गकॉन्ग मौद्रिक प्राधिकरण (एचकेएमए) ने अपनी हालिया नीति के तहत छूट-विंडो के माध्यम से आधार-दरें रातों-रात बढ़ाईं। इनमें 50 बेसिस प्वाइंट का बदलाव कर इन्हें 4.75% पर लाया गया। यूएस फेडरल रिज़र्व द्वारा लगभग इतने अंतर से दरें बढ़ाने जाने के बाद यह फैसला किया गया।

दरें बढ़ाए जाने के बाद 19 दिसंबर, 2022 को एचकेडी की हालत में सुधार हुआ और वह एक डॉलर के मुकाबले 7.78 के मूल्य पर बंद हुआ।

यूएई दिरहम

Dh यूएई दिरहम यूएस डॉलर को टक्कर देता रहा। यह दुनिया की उन चुनिंदा मुद्राओं में शामिल है, जो कमोबेश स्थिर रहती हैं। संयुक्त अरब अमीरात की अर्थव्यवस्था पहली तिमाही में करीब 8.2% की दर से बढ़ी। इसे उच्च तेल उत्पादन से अच्छा समर्थन मिला। यूएई की वास्तविक जीडीपी में भी इस साल 5.4% और अगले वर्ष 4.2% की वृद्धि की संभावना है। यूएस फेडरल रिज़र्व द्वारा दरें बढ़ाए जाने के बाद सेंट्रल बैंक ऑफ यूएई ने भी रातों-रात की जाने वाली जमाओं पर लागू दरों में 50 बेसिस प्वाइंट की बढ़ोत्तरी कर दी। इससे दरें 3.9% से 4.4% पर आ गईं।

इसके अलावा यूएई के साथ भारत एक ऐसा भुगतान-तंत्र विकसित करने पर काम कर रहा है, जिसमें रुपये और दिरहम के जरिए कारोबार संभव हो सके। कोशिश है कि जनवरी तक यह तंत्र सक्रिय हो जाए। इससे कारोबारी लेनदेन की लागत घटाने में मदद मिलेगी। यह दक्षिण एशियाई देश डॉलर से अलग हटकर द्विपक्षीय कारोबारी संपर्कों को मजबूत करने पर लगातार जोर दे रहा है। इस नई व्यवस्था में तेल और गैस की खरीद के लिए होने वाला लेनदेन भी शामिल होगा। दोनों देशों के बीच इस एकीकृत आर्थिक साझेदारी समझौते से भारत से यूएई को किए जाने वाले निर्यात को बढ़ाने में काफी मदद मिलेगी।

बीती तिमाई के दौरान एक यूएस डॉलर के मुकाबले एईडी (दिरहम) का कारोबार 3.6718 से 3.6730 के बीच बना रहा। जबकि 19 दिसंबर, 2022 को एक यूएस डॉलर का मूल्य 3.6724 एईडी रहा। ■

एक्ज़िम मित्र

भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने और भारतीय उद्यमियों के बीच व्यापार वित्त, ऋण बीमा और व्यापार से जुड़ी अन्य जानकारियों के प्रसार की विषमता को दूर करने के लिए इंडिया एक्ज़िम बैंक ने एक पोर्टल तैयार किया है। इसके मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं। निर्यातों के लिए ऋण की उपलब्धता के संबंध में जानकारी मुहैया कराना और व्यापार से संबंधित सूचनाएं प्रदान करना। एक्ज़िम मित्र के जरिए इस तरह के प्रयास करना, जिनसे भारतीय उद्यमियों की अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जुड़ी जिज्ञासाओं का समाधान हो। इनमें से कुछ नीचे दी गई हैं:

विदेशी क्रेता को सीधे या बैंक के माध्यम से दस्तावेज भेजने पर स्पष्टीकरण और यदि वे दस्तावेज खो देते हैं तो बैंक का उत्तरदायित्व

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में क्रेता और विक्रेता के बीच हमेशा भरोसे की कमी रहती है। इसलिए इस मामले में, बैंक के माध्यम से दस्तावेज का आदान-प्रदान करने की सलाह दी जाती है। हालांकि यदि कोई बड़ा निर्यातक या स्टेटस प्रमाणपत्र धारक है, तो वह सीधे भी खरीदार को दस्तावेज भेज सकता है।

अगर निर्यातक द्वारा एलसी के तहत दस्तावेज भेजे जाते हैं तो वह बैंक जो दस्तावेज को प्रोसेस कर रहा है, तो दस्तावेज गुम हो जाने के लिए वही उत्तरदायी होगा। अगर मामले में दस्तावेज कलेक्शन के आधार पर हैं, तो संबंधित बैंक तभी भुगतान करेगा जब आयातक भुगतान कर चुका हो।

इससे संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के वस्तु एवं सेवाओं के निर्यात संबंधी मास्टर परिपत्र का संदर्भ लिया जा सकता है- (https://rbi.org.in/scripts/BS_ViewMasDirections.aspx?id=10395#C10) और इसमें भी "निर्यातक द्वारा दस्तावेज सीधे भेजना" नाम का एक खंड है, जहां से पूरी संबंधित जानकारी मिल सकती है।

उस अतिरिक्त लागत के अनुमान के संबंध में, जो सीआईएफ के तहत भारत में अपशिष्ट ओसीसी पेपर आयात करने पर किसी को भुगतान करना होगा?

जब भी कोई वस्तुएं सीआईएफ (लागत, बीमा और लदान) आधार पर खरीदी जाती हैं तो जिस बंदरगाह से वस्तुएं भेजी जानी हैं, वहां तक उनकी लागत और जोखिम से जुड़ी पूरी जिम्मेदारी विक्रेता की होती है। इसके बाद सभी तरह की लागत क्रेता द्वारा उठाई जाती है। ऐसे मामले में सटीक लागत का अनुमान लगाना मुश्किल होता है। इसलिए, क्योंकि हर ढुलाई वाले का अपना व्यावसायिक ढांचा होता है। फिर भी सामान्य लागत के कुछ हिस्से इस तरह हो सकते हैं:

- शिपिंग कंपनी के शुल्क
- कंटेनर लदान अड्डे (कंटेनर फ्रेट स्टेशन) के शुल्क
- उत्पाद एवं सीमा शुल्क से मंजूरी (कस्टम क्लियरेंस) संबंधी शुल्क
- गंतव्य स्थल तक परिवहन

कंटेनर, शिपिंग लाइन और सीएफएस (कंटेनर फ्रेट स्टेशन) के आकार के हिसाब से लागत परिवर्तनीय हो सकती है।

भारत से ओमान के लिए जिंदा बकरों के निर्यात से संबंधित

पशुधन के निर्यात के लिए जिन महत्त्वपूर्ण दस्तावेज की जरूरत होती है, वे इस प्रकार हैं

- आयात/निर्यात से संबंधित वैध लाइसेंस या परमिट की प्रति। अगर परमिट/लाइसेंस की जरूरत नहीं है तो निर्यातक/मालिक की ओर से वचन-पत्र की जरूरत होती है।
- आयातक देश के निर्धारित प्रारूप में आधिकारिक स्वास्थ्य संबंधी अपेक्षाएं। अगर स्वास्थ्य संबंधी अपेक्षाओं का कोई प्रारूप निर्धारित नहीं है या उसकी जरूरत नहीं है तो उस स्थिति में भी निर्यातक/मालिक की ओर से वचन-पत्र की आवश्यकता होती है।
- आयातक देश के मापदंडों के अनुसार स्वास्थ्य संबंधी सभी अपेक्षाओं की पूर्णता। जैसे- परीक्षण, इलाज, टीकाकरण आदि (अगर लागू होता हो तो)।
- पशु के टीकाकरण रिकॉर्ड आदि से संबंधित वर्तमान स्वास्थ्य दस्तोज की स्व-प्रमाणित प्रतियां।
- अन्य आवश्यक महत्त्वपूर्ण वचन-पत्र आदि इस प्रकार हैं
  - उत्पत्ति स्थल से संबंधित दस्तावेज, अगर लागू होते है / मांगे जाएं
  - हवाई रास्ते से संबंधित बिल की प्रति या पशु की यात्रा के विवरण
  - अगर मालिक सीधे संपर्क स्थापित नहीं कर रहा है तो प्राधिकार-पत्र

इसके अलावा कोई भी व्यक्ति पशुधन उत्पाद से जुड़े दस्तावेज और निर्यात प्रक्रिया से जुड़ी अन्य जानकारियां लेने के लिए "एनीमल क्वारेंटाइन एंड सर्टिफिकेशन सर्विसेज़" पर जा सकता है । इसका लिंक यह है – http://www.aqcsindia.gov.in/import-export-of-livestock-and-livestoc-products.html

मलेशिया में प्याज के आयात और औपचारिकताओं से संबंधित सूचना

मलेशिया में माल ले जाते समय या वहां से बाहर माल लाते वक्त, सीमा शुल्क अधिकारियों को व्यापारियों द्वारा कुछ जरूरी दस्तावेज आदि उपलब्ध कराए जाने चाहिए। जैसे- सीमा शुल्क निर्यात या आयात घोषणा, वाणिज्यिक चालान, लदान बिल, पैकिंग सूची और मूल प्रमाण पत्र आदि।

उन आयातित और निर्यातित सामानों के लिए मलेशिया हार्मोनाइज्ड टैरिफ सिस्टम (एचटीएस) का पालन करता है, जो आसियान सदस्य देशों में पैदा नहीं होते या बनाए नहीं जाते। जबकि आसियान सदस्य देशों (एएचटीएन) से आयातित और निर्यातित सामानों के लिए मलेशिया आसियान हार्मोनाइज्ड टैरिफ नामकरण (एएचटीएन) का पालन करता है।

मलेशिया में कई मुक्त औद्योगिक क्षेत्र (एफआईजेड) तथा मुक्त व्यावसायिक क्षेत्र (एफसीजेड) हैं। एफआईजेड और एफसीजेड आधारित कंपनियां कच्चा माल, तैयार वस्तुएं और उपकरण आदि बिना कोई शुल्क चुकाए आयात कर सकती हैं। मलेशिया ने ऑस्ट्रेलिया, चिली, भारत, जापान, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और तुर्की जैसे सात देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर भी दस्तखत कर रखे हैं। इन एफटीए का फायदा लेने के लिए व्यापारियों को अपनी वस्तुओं के साथ ही उनकी उत्पत्ति से संबंधित अधिमान्य प्रमाणपत्र (पीसीओ) जमा कराना जरूरी है। पीसीओ के लिए मलेशिया के एकल-खिड़की प्रणाली दबांग नेट पर व्यापारियों को आवेदन देना आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त मलेशिया सरकार ने एक "मुक्त व्यापार समझौता कैलकुलेटर" भी विकसित किया है। इसके माध्यम से व्यवसायियों को यह बताने में सहयोग दिया जाता है कि उनकी वस्तुएं, उत्पाद शुल्क में छूट के लिए पात्र हैं या नहीं।

क्या एक किसान जो अन्य खेतों से लिए गए उत्पादों का निर्यात करता है, वह निर्यात के लिए शून्य जीएसटी के साथ आयकर छूट के लिए भी पात्र है?

कोई भी व्यक्ति या एक किसान, जो घरेलू या अंतरराष्ट्रीय बिक्री के लिए अन्य किसी खेत से वस्तुएं खरीदता है, वह मर्चेंट ट्रेडर है। सौदागर करोबारी है। ऐसे मामले में कारोबारी मर्चेंट निर्यातक है और निर्यात से उसे होने वाला लाभ कर योग्य है। अगर उसकी वस्तु या उत्पाद पर जीएसटी भी लगता है तो मर्चेंट निर्यातक के पास दो विकल्प होते हैं। पहला- 0.1% जीएसटी का भुगतान करे और वचन-पत्र देकर निर्यात करे। दूसरा- संबंधित वस्तु या उत्पाद पर जितना भी जीएसटी देय है, उसका भुगतान करे और जीरो-रेटेड यानी शून्य-दर पर निर्यात करे।

आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

वस्तु व्यापार

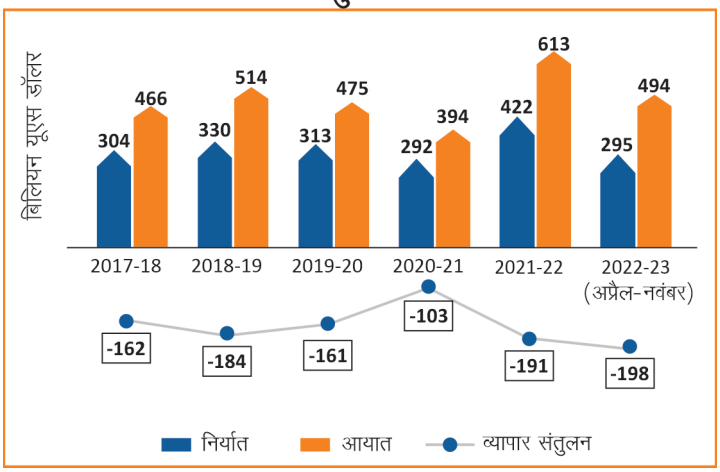

स्रोत: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

सेवाएं व्यापार

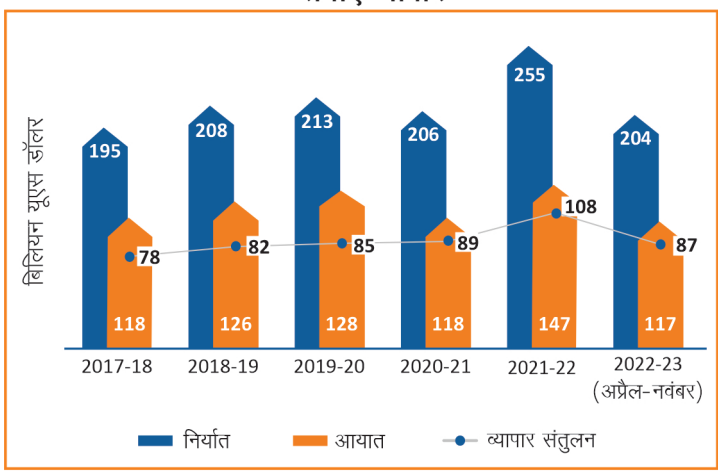

स्रोत: आरबीआई और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

चालू खाता घाटा

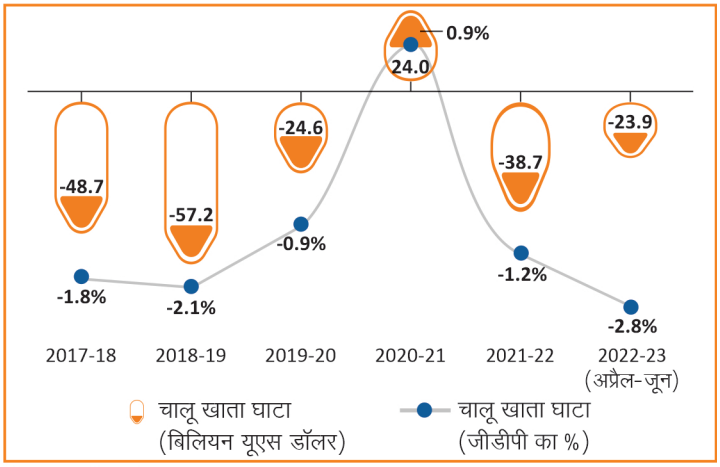

स्रोत: आरबीआई

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई)

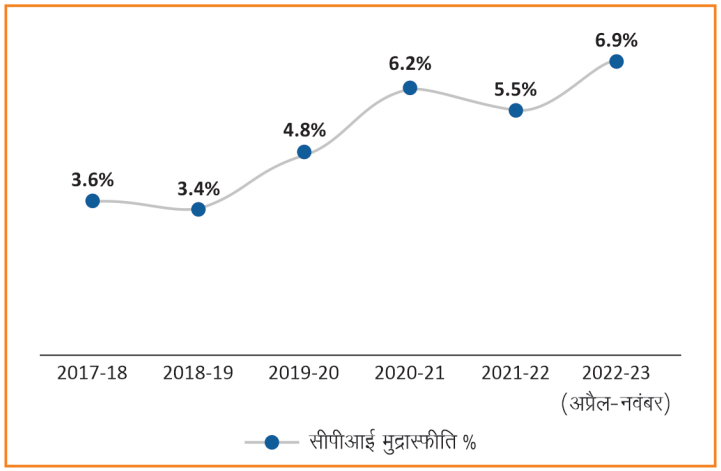

स्रोत: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रत्यक्ष विदेशी मुद्रा निवेश का प्रवाह

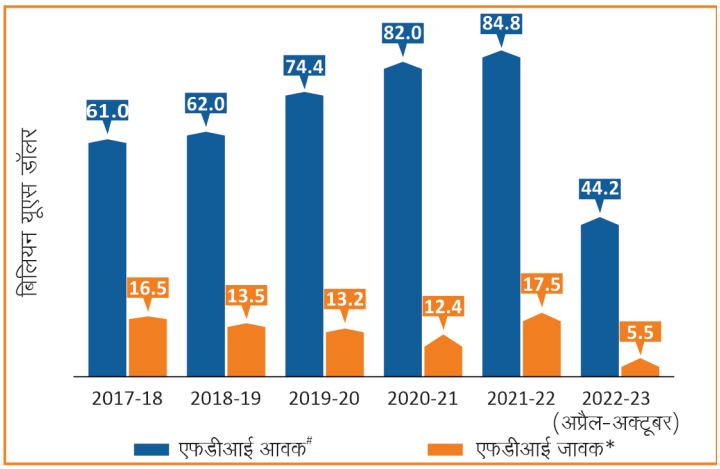

*नोट: *एफडीआई जावक वास्तविक आंकड़े दर्शाते हैं और इसमें इक्विटी, ऋण, इन्वोक की गारंटियां शामिल हैं।*
#एफडीआई आवक में इक्विटी, पुनर्निवेश आय और अन्य पूंजी शामिल है।
स्रोत: आरबीआई और वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

क्षेत्रवार उत्पादन

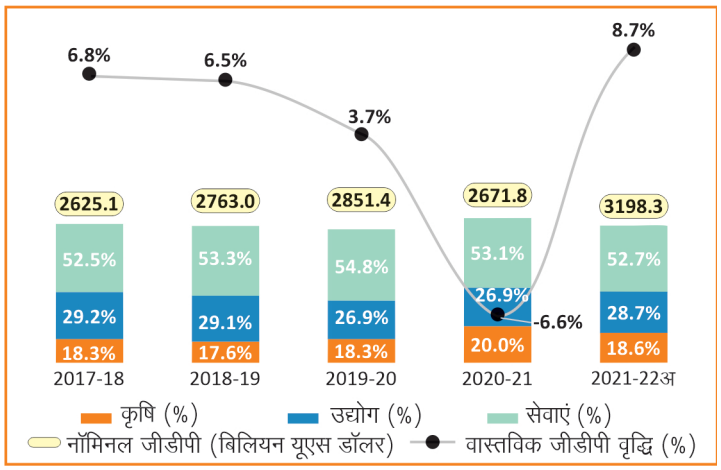

नोट: नॉमिनल जीडीपी (बिलियन यूएस डॉलर); अ-अनुमानित
स्रोत: अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान और सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय